ब्रिटेन में चार सप्ताह

अक्षयकुमार जैन
प्रधान संपादक
दैनिक 'नवभारत टाइम्स'
दिल्ली बम्बई

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

प्रकाशक :
नेशनल पब्लिशिंग हाउस,
नई सड़क, दिल्ली

मूल्य
दो रुपये ५० नये पैसे

मुद्रक
रामाकृष्णा प्रेस
कटरा नील, दिल्ली

ब्रिटेन में चार सप्ताह

क्रम

१ यात्रा का प्रारम्भ	१
२ लन्दन के दर्शनीय स्थल	६
३ संग्रहालय और पुराने राजभवन	११
४ शिक्षण संस्थाएँ	१७
५ संसद और राजनीतिक दल	२४
६ स्कॉटलैंड यार्ड में कुछ घंटे	३०
७ स्कॉटलैंड यार्ड का इतिहास	४२
८ शेक्सपियर की जन्मभूमि में	४८
९ शेक्सपियर रंगमंच	५५
१० स्कॉटलैंड की शोभा	६१
११ पुराने क़िले	६६
१२ राष्ट्रमंडल	७२
१३ समाचार पत्रों की दुनिया	७७
१४ यात्रा की समाप्ति	८३

चित्र संख्या १४

चित्र

१ केन्सिंगटन पैलेस होटल लन्दन
२ लन्दन का विहंगम दृश्य
३ विंडसर राजभवन
४ आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय
५ पार्लमेंट भवन
६ स्कॉटलैंड यार्ड का सूचना-कक्ष
७. स्कॉटलैंड यार्ड के नये भवन का मुख्य द्वार
८. शेक्सपियर का जन्मस्थान
९ शेक्सपियर का घर
१० स्कॉटलैण्ड की शोभा
११ स्कॉटलैण्ड का ऐतिहासिक राजभवन
१२ लिवरपूल में राष्ट्रमण्डलीय देशों के झण्डे
१३ समाचार पत्रों का केन्द्र, फ्लीट स्ट्रीट
१४ रोमस्टेड प्रयोगशाला

दो शब्द

"ब्रिटेनिया तुम दुनिया पर राज करो—" ब्रिटेन के इस लोकप्रिय गीत की ध्वनि आज क्षीण पड़ती जा रही है। जिस ब्रिटिश साम्राज्य में कभी सूरज न डूबने की उक्ति चरितार्थ होती थी वह ब्रिटिश साम्राज्य अथवा कहना चाहिए कि वही ब्रिटेन द्वितीय विश्व महायुद्ध के उपरान्त राजनीतिक घटनाचक्र के वशीभूत आज विश्व की प्रथम शक्ति नहीं रह गया है। लेकिन इतने सुदीर्घ काल तक ब्रिटिश की राज पताका विश्व के इतने क्षितिजों पर फहरायी और ब्रिटिश सम्राट् का राजमुकुट इतने देशों में समादृत रहा कि दुनिया की पिछली दो शताब्दियों में इतिहास और सभ्यता का चाहे जिस प्रकार भी निर्माण हुआ हो ब्रिटेन और ब्रिटिश चारित्र्य का उसमें योगदान अवश्य रहा है।

इस महान् राष्ट्र के साहित्य दर्शन कला और संस्कृति के समान ही इसका चारित्र्य भी इतिहास में एक सुस्पष्ट ऐतिहासिक व्यक्तित्व प्राप्त कर चुका है और यह चरित्र राष्ट्रीय जीवन से लेकर इस देश की एक लघु इकाई तक में समान रूप से छविमान होता है।

ब्रिटिश जीवन वस्तुतः अनन्त परम्पराओं का समुच्चय है। इतनी महान् संस्कृति के स्वामी इस राष्ट्र के जीवन को इस लघु पुस्तिका में समाहित कर सकने की गर्वोक्ति

मैं नहीं करूँगा फिर भी मैंने बूँद-बूँद करके इस घट को पूरित करने का प्रयास किया है।

सबसे बड़ी बात मैंने ब्रिटिश जनता के जीवन में यह देखी कि वह उन मूर्धन्य विचारकों दार्शनिकों, साहित्यकारों, कलाकारों की विरासत का मूर्तिमान स्वरूप है जिन्होंने समस्त यूरोप का नेतृत्व किया है और कला एवं संस्कृति की समस्त विधाओं को प्रतिष्ठित किया।

ब्रिटेन के नागरिक उन युग निर्माताओं के जीवन्त स्मारक हैं और इस देश की धरती वैसे ही उनके संस्पर्श से आज भी उसी प्रकार संवेदनशील है जैसे कि उनके जीवनकाल में थी। ब्रिटिश जनता ने अपने इन पूर्व पुरुषों के स्मृति-स्थानों को मान दिया है और ये स्थान आज इस राष्ट्र में पावन तीर्थ के रूप में समादृत हैं।

इस पुस्तक में आप इन तीर्थों की झाँकी देख सकेंगे। मेरा प्रवास काल ब्रिटेन में केवल चार सप्ताह का था इतने थोड़े समय में जितना सम्भव हो सका मैंने देखा। इस पुस्तक के माध्यम से यदि आप भी उसके कुछ अंश देख सकने में सफल हो सके तो मैं अपने प्रयास को धन्य समझूँगा।

अक्षयकुमार जैन

यात्रा का प्रारम्भ

एक व्यक्ति ने विदेश के किसी बड़े नगर में दो दिन रहने के बाद अपने घरवालों को चिट्ठी लिखी कि मैंने यह बड़ा नगर अच्छी तरह देख लिया है। परन्तु दो महीने बाद जो उसका खत पहुँचा तो उसमें लिखा था कि अभी कुछ-कुछ ही देख पाया हूँ। और ताज्जुब देखिए कि जब एक साल वहाँ रहने के बाद वह घर लौटा तो उसने कहा कि इतने थोड़े वक्त में देखा ही क्या जा सकता।—अगर इस कहानी से कुछ नतीजा निकल सकता है तो मैं तो ब्रिटेन में कुल चार सप्ताह ही घूमा-फिरा वह भी अकेले एक नगर में नहीं अनेक में, इसलिए मैं जो कुछ लिखूंगा वह अधिकतर मेरे अपने संस्मरण ही होंगे, वहाँ के बारे में कितना तथ्यपूर्ण होगा यह आप आसानी से अन्दाज लगा सकते हैं। लेकिन फिर भी आँख खोलकर चलने की मैंने कोशिश की और लोगों से मैं मिला। अतः इसमें आपको जो तस्वीर दिखायी दे वह अधूरी भले ही हो मेरा खयाल है कि गलत नहीं होगी।

१४ जून १९६० को जब कि दिल्ली का तापमान ११० फारनहाइट से ऊपर था, मैं दोपहर को पालम हवाई अड्डे से

रवाना हुआ। विमान की बलिहारी है कि उसी दिन शाम को सवा नौ बजे लंदन भी पहुँच गया।

दिल्ली से विमान उत्तर पश्चिम की ओर बढ़ा और कुछ ही देर बाद मालूम हुआ कि हम अमृतसर के ऊपर से आगे बढ़ रहे हैं। मुझे ध्यान हो आया कि यह वह अमृतसर है जहाँ ऐतिहासिक स्वर्ण मंदिर है और जहां कभी जलियांवाले बाग की घटना हुई थी। इन दो बातों पर मन विचार कर रहा था कि तभी विमान के उद्घोषक ने बतलाया कि हम लाहौर के ऊपर से गुजर रहे हैं।

पाकिस्तान

लाहौर के साथ न जाने कितनी स्मृतियाँ जुड़ी हुई हैं। मैं सोच रहा था १३ वर्ष पहले इस उप-महाद्वीप का वह अंग भारत का ही एक भाग था। राजनीतिक परिस्थितियों ने एक नये राज्य को जन्म दिया। यही वह लाहौर था जहाँ अनारकली और मुगल शाहजादे की प्रेम कहानी घटित हुई थी। यही वह लाहौर था जहाँ अनेक बार आक्रांताओं से सेनाओं को जूझना पड़ा था। और तभी कुछ देर बाद अफगानिस्तान का वह पहाड़ी क्षेत्र दिखायी देने लगा जहां शायद नीचे कहीं कन्दराओं में बौद्ध-कालीन मठ-मन्दिरों के भग्नावशेष आज भी विद्यमान हैं।

विमान की गति मेरे मन पर उतरनेवाली नयी तस्वीरों की गति से अधिक तीव्र थी। अब हम ईरान की सूनी पर्वत मालाओं के ऊपर से आगे बढ़ रहे थे। पाकिस्तान की सीमा

से तेहरान तक नीचे समस्त क्षेत्र पहाड़ियों से ढका था, यहाँ कहीं नाम को भी हरियाली नहीं थी, और पानी भी कहीं दिखायी नहीं पड़ता था। विज्ञान के प्रयोग से जब यह क्षेत्र सरसब्ज हो जायगा तब उसका रूप ही शायद कुछ और हो जाय। पर अभी इस काम की तरफ ध्यान भी नहीं जा रहा है।

तेहरान हवाई अड्डे पर विमान उतरा, उस समय हमारी घड़ियाँ आगे हो गयी थीं। स्थानीय समय के साथ सम्बन्ध जोड़ने के लिए हमें अपनी घड़ी ढाई घंटा पीछे करनी पड़ी और इस प्रकार जीवन का ढाई घंटा हमें और मिल गया।

तेहरान से रोम तक

ईरान से निकल कर विमान तुर्की की सीमा पार करने लगा। यह तुर्की जहाँ अभी पिछले दिनों क्रांति हुई थी। और कुछ ही देर बाद हम ग्रीस के किनारे से, जहाँ की प्राचीन सभ्यता यूरोप में और संसार में आज भी इज्जत के साथ याद की जाती है निकल रहे थे। कुछ ही समय में रोम के हवाई अड्डे पर हमारा विमान उतरा। रोम की ऐतिहासिक परम्परा के दर्शन आज भी निकट के भग्नावशेषों में किये जा सकते हैं। यह आधुनिक हवाई अड्डा बहुत सुन्दर और आकर्षक है। यहाँ हमें फिर अपनी घड़ियाँ ढाई घंटे और पीछे करनी पड़ीं। अब लन्दन तक का समय इसी समय के अनुसार चला।

अगले दो घंटे और बीस मिनट में जर्मनी जिसके पूर्व और पश्चिम के एकीकरण का प्रश्न एक अन्तरराष्ट्रीय गुत्थी

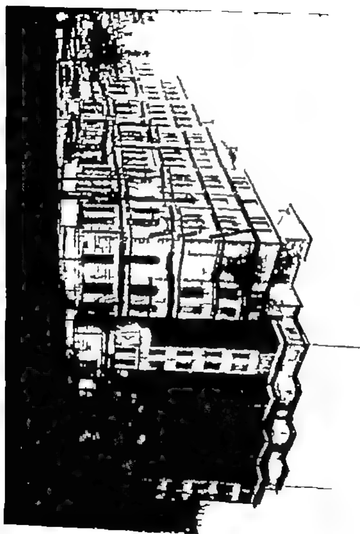
बना हुआ है स्विटजरलैंड—जहाँ की आल्प्स पर्वतमाला का सौंदर्य देखते ही बनता है, शब्दों में बाँधा नहीं जा सकता और फ्रांस—जहाँ बड़े राष्ट्राध्यक्षों का सम्मेलन पिछले दिनों ही असफल हुआ, धीरे धीरे पीछे छूट गये तथा शाम के सवा नौ बजते-बजते विमान लन्दन हवाई अड्डे पर उतर गया।

समय की बलिहारी

उस समय वहाँ धूप खिली हुई थी झीनी झीनी बूँदें पड़ रही थीं हवा में नमी थी और तापमान ६१ अंश होने के कारण सर्दी भी थी। आश्चर्य देखिये कि वहाँ इन दिनों गर्मी के मौसम में शाम को साढ़े दस बजे तक दिन का उजाला रहता है और प्रातः चार बजे के कुछ बाद ही सूर्य पुनः उदय हो जाता है जब कि सर्दी में तीसरे-पहर चार बजते-बजते अँधेरा छा जाता है और सुबह कब होती है यह अक्सर बहुतों को मालूम नहीं पड़ता क्योंकि दस बजे तक धुँध छायी रहती है।

हवाई अड्डे से हमें केंजिंगटन पैलेस होटल ले जाया गया जो लन्दन के पश्चिमी भाग में उस केंजिंगटन महल के सामने है जहाँ ब्रिटेन की महारानी की छोटी बहिन नव परिणीता राजकुमारी मारग्रेट अपने पति श्री आर्मस्ट्रांगजोन्स के साथ केरेबियन सागर में मधुयामिनी व्यतीत करने के बाद स्थायी रूप से निवास के लिए पहुँच गयी हैं।

लन्दन की पहली शाम उस विशाल होटल के सामने कई



एकड़ में फैले उस विलास उद्यान में घूमकर व्यतीत की जहाँ मनोहारी सर्प झील (सर्पेंटाइन लेक) के किनारे मुर्गाबियों के साथ-साथ नवयुवक-नवयुवतियाँ हरी-हरी दूब पर क्रीड़ा-केलि करते स्थान-स्थान पर दिखायी दिये। लन्दन का यह दृश्य भारत को ग्राम के दृश्य से कुछ भिन्न लगा।



लन्दन के दर्शनीय स्थल

लन्दन को किसी ने 'नन्दन' कहा तो यह झूठ भी नहीं कहा क्योंकि यहाँ अनेक उपवन हैं, बाग-बगीचे हैं और टेम्स ने, इन सब में चार चाँद लगा दिये हैं। थोड़ी-थोड़ी दूर पर ऐसे उद्यान मिल जाते हैं जहाँ व्यस्त जीवन वाले लन्दनवासी पार्क की छाया में बैठकर शान्ति से साँस ले सकें।

प्रकृति की ऐसी कृपा है कि उद्यानों की हरियाली बनाये रखने के लिए लन्दनवासियों को बहुत मेहनत नहीं करनी पड़ती। विशेषकर जिन दिनों मैं वहाँ था चाहे जब छोटी-सी बदली आकर बूँदें गिरा जाती थी। और पिछली कुछ शताब्दियों में मनुष्य ने भी लन्दन को दर्शनीय बनाने में कोताही नहीं की।

मोमी मूर्तियों का संग्रहालय

इतवार की एक सुबह यह निश्चय किया कि लन्दन के कुछ दर्शनीय स्थलों का चक्कर लगाया जाय। सबसे पहले मदाम तुसो के मोमी मूर्तियों के संग्रहालय में जाना हुआ। वास्तव में लन्दन का यह अजीबो गरीब स्थान है।

यह संग्रहालय मदाम तुसौ के चचा फिलिप कर्टियस ने १७४७ में बर्न में शुरू किया था और आश्चर्य देखिये कि जिन मदाम तुसौ के नाम पर यह संग्रहालय विख्यात है उनका जन्म बारह वर्ष बाद १७६१ में स्ट्रेसबुर्ग में हुआ था। १७६२ में बर्न से इसे पेरिस ले जाया गया। और १७९३ में फिलिप की मृत्यु के बाद मदाम तुसौ इस संग्रहालय की उत्तराधिकारिणी बनी। १८०२ में इसे इंग्लैण्ड लाया गया। ३३ वर्ष बाद बेकर स्ट्रीट में प्रथम बार यह प्रदर्शनी प्रारम्भ हुई, किन्तु दुर्भाग्यवश १५ वर्ष के बाद ही १८५० में मदाम की मृत्यु हो गयी और वर्तमान स्थान पर यह संग्रहालय १८८४ में ही स्थापित किया जा सका। इन दिनों तुसौ परिवार के श्री बर्नार्ड कलाकार हैं जो इस संग्रहालय की देखभाल और इसमें परिवर्तन-परिवर्धन करते हैं। उनका जन्म १८९६ में हुआ था।

दुर्भाग्य देखिये कि १९२५ में अग्निकाण्ड से यह संग्रहालय प्रायः नष्ट भ्रष्ट हो गया किन्तु उत्साही और अध्यवसायी कलाकार ने तीन मास में ही इसे फिर ज्यों का त्यों खड़ा कर दिया।

इस समय इस संग्रहालय में कोई ५०० से अधिक मूर्तियाँ ऐसी सजीव रखी हुई हैं कि मानो अब बोलीं अब बोलीं। इसके एक भाग में ब्रिटेन के महाराजा-महारानियों की मूर्तियाँ हैं जिनसे शाही इतिहास पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। ब्रिटेन के १२ सुप्रसिद्ध प्रधानमंत्री वर्तमान सरकार तथा विरोधी दल के नेता का एक स्थान पर ऐसा सुन्दर प्रदर्शन है कि लगता

है मानो मन्त्रिमण्डल की वास्तविक बैठक हो रही हो। प्रसिद्ध योद्धाओं में ड्यूक आफ वेलिंगटन, लार्ड नेल्सन और नैपोलियन बोनापार्ट की मूर्तियां अति सुन्दर हैं। धार्मिक पुरुषों में पवित्र पोप, ऐसा लगता है मानो प्रत्यक्षतः आशीर्वाद दे रहे हैं।

अमरीका के बारह राष्ट्रपतियों की मूर्तियां भी वहां विद्यमान हैं जिनमें श्री आइजनहावर की मूर्ति भी है। विदेशी राजनेताओं में हमारे प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू, मार्शल स्टालिन क्रुश्चेव चाउ एन-लाई, मार्शल टिटो डा० एनक्रूमा आदि पश्चिमी पार्श्व के बायी ओर मौजूद हैं। श्री नेहरू की मूर्ति बहुत सुन्दर नहीं थी। उसके बारे में शिकायतें की जाती रहीं। इसीलिये जब इस बार पंडितजी राष्ट्रमण्डलीय प्रधान मन्त्री सम्मेलन में भाग लेने लन्दन गये तो तुसौ संग्रहालय के कलाकारों को उनकी मूर्ति दुबारा ठीक करने का सुअवसर प्राप्त हो गया। जब इस बार मैं वहां गया तो पंडितजी की मूर्ति वहां न थी। उसे ठीक करने के लिए हटा दिया गया था।

यहां एक घटना का उल्लेख अप्रासंगिक न होगा।

ब्रिटेन की महारानी की बहिन राजकुमारी मारग्रट जिस दिन अपने पति श्री आमस्ट्रोंग-जोन्स के साथ मधुयामिनी व्यतीत करके स्वदेश लौटी संयोग से उसी दिन मैं यह संग्रहालय देखने गया था। संग्रहालय में श्री आर्मस्ट्रांग-जोन्स का पुतला गायब था। उस समय उस ओर मेरा विशेष ध्यान न गया किन्तु अगले दिन समाचारपत्रों से मालूम हुआ कि किसी



लन्दन का विहंगम दृश्य, जहां विभिन्न संग्रहालय हैं

ने उस पुतले को संग्रहालय में से गायब कर दिया और अगले दिन शाम को वह एक टेलीफोन बूथ में रखा हुआ मिला। इस सम्बन्ध में दो प्रकार की चर्चायें थी। एक तो यह कि ब्रिटेन के कुछ लोग राजकुमारी का एक सामान्य व्यक्ति से विवाह करना पूरी तरह अंगीकार नहीं कर पाये हैं। दूसरा यह कि श्री आर्मस्ट्रांग-जोन्स के कुछ मनचले मित्रों ने यह घटना कर डाली थी। जो भी हो घटना दिलचस्प थी।

संग्रहालय की परोपकारी विश्व विभूतियों में महात्मा गाँधी भी खड़े हैं। महात्माजी की यह मूर्ति भी उतनी सुन्दर नहीं जितने कि वह थे। अंग्रेजी के साहित्यकारों में सर वाल्टर स्काट से लेकर जार्ज बर्नार्ड शा तक पन्द्रह लब्ध प्रतिष्ठ विद्वानों की मूर्तियां हैं। विक्टोरिया क्रास पानेवाले अंग्रेज भारतीय तथा अन्य जवान, रेडियो, फिल्म, रंगमंच, खेल-कूद के क्षेत्रों में प्रसिद्धि प्राप्त अनेक स्त्री-पुरुषों के पुतले भी वहां हैं।

कुछ झांकियां भी दिखायी गयी हैं जिनमें 'निद्रामग्ना' (स्लीपिंग ब्यूटी) और मदाम तुसो की दो जीवन घटनायें, जोन आफ आर्क मेरी क्वीन आफ स्काट्स के वध का दृश्य, नपोलियन का दाग फ्रान्सीसी क्रांति से सम्बन्धित छुरा बेस्टिल की कुञ्जी नेपोलियन के जीवन से सम्बन्धित अन्य वस्तुयें बड़ी प्रभावोत्पादक हैं। १४८३ में लन्दन टावर में छोटे राजकुमार की हत्या का दृश्य भी बड़ा कारुणिक है।

इस मोमी-संग्रहालय के साथ ही भयानक घर (चेम्बर आफ

हारर्स) भी इसी इमारत में है। यह घर जमीन के नीचे तल-घर में बनाया गया है जिससे भयानकता का वातावरण और भी उग्र हो उठा है। इसमें ९० ऐसे स्त्री-पुरुषों की मूर्तियों के दृश्य हैं जिन्हें फांसी पर चढ़ाया गया अथवा जिनकी क्रूरता पूर्वक हत्या कर डाली गयी। इनमें ऐसे डाक्टर भी हैं जिन्होंने अपने मरीजों को मार डाला था और सामन्तकालीन उन अत्याचारों के दृश्य भी हैं जो मध्ययुगीन यूरोप में एक सामान्य बात थी। इसमें पहुँचकर दिल दहल जाता है। काली-काली दीवारें और वे हथियार भी रखे हैं जो हत्याओं के समय काम में लाये गये थे। इस घर में बच्चों को नहीं जाना चाहिए क्योंकि उनके मन पर एक अत्यन्त भयाक्रान्त प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। शायद इसीलिए पास के ही एक कक्ष में बच्चों के खेल की अनेक चीजें रखी हैं। यहां के एक पनी-ऐ-पैनी स्लाट मशीनों में डालकर खाने-पीने की चीजें पा सकते हैं तथा नाच और गाने के दृश्य दो मिनट के लिये देख सकते हैं।



संग्रहालय और पुराने राजभवन

मदाम तुसौ का संग्रहालय देखने के बाद हम सुप्रसिद्ध ब्रिटिश संग्रहालय देखने गये।

ब्रिटिश संग्रहालय के निर्माण का इतिहास बहुत पुराना है। जार्ज द्वितीय के शासन काल में संवत् के १७५३ के एक कानून के अनुसार एक ट्रस्ट बनाया गया था, जिसने सर हेन्स स्लोन (१६६०–१७५३) का पुस्तकालय तथा अन्य पुरातन वस्तुयें दिवंगत सर हन्सी की वसीयत के अनुसार २० हजार पौंड मूल्य देकर अपने अधिकार में ले लीं। इसी के साथ एलिजाबेथ और जेम्स प्रथम के शासन काल में सर राबर्ट काटन (१५७१ १६३१) के उत्तराधिकारियों से भी उनकी संग्रहीत प्राचीन वस्तुयें ले ली गयी। ये वस्तुयें पहले काटन हाउस में रखी गयी थीं किन्तु जब वह भवन खस्ता हालत में हो गया तब ट्रस्टियों को इन्हें एक अच्छे स्थान पर ले जाने की चिन्ता हुई।

अग्निकाण्ड से इस संग्रहालय को भी काफी क्षति पहुंची बहुत-सी बहुमूल्य पाण्डुलिपियां आग की भेंट हो गयीं। धीरे-

धीरे संसद की ओर से जो समय-समय पर अनुदान प्राप्त हुए वे दक्षिण केंजिंगटन के विशाल भवन के निर्माण में सहायक हुए और इस समय संग्रहालय के कई विभाग बन गये हैं —(१) पुस्तकालय विभाग में मुद्रित पुस्तकें एवं प्राचीनतम पाण्डुलिपियां हैं (२) संग्रहालय विभाग में सिक्के और मेडल मिस्री पश्चिमी एशियायी, यूनानी और रोमन ब्रिटिश और मध्ययुगीन प्राचीन वस्तुयें तथा भारत एवं दक्षिणी एशिया की चीजें भी संरक्षित है। इनके अलावा चित्रकारी और ड्राइंग की अनेक कलाकृतियां हैं साथ ही एक आधुनिक अनुसंधानशाला भी है।

इतिहास की प्रचुर सामग्री

जिस समय हम संग्रहालय में गये कई स्थानों पर अध्ययन में व्यस्त अनेक विद्यार्थी वहां मौजूद थे। प्रवेश द्वार से घुसते ही नक्शे बनाने का इतिहास बड़ा दिलचस्प लगा। मानचित्र बनाने का क्रमिक इतिहास यहां सविस्तार दिया हुआ है। भारत कक्ष में जन बौद्ध और हिन्दू मूर्तियों के अलावा जिनमें से अधिकांश १२वीं शताब्दी से पहले की हैं बहुत-सी अन्य वस्तुयें भी हैं जिनमें प्राचीनतम डाक-टिकटें, पुस्तकें, पाण्डुलिपियां एवं विभिन्न प्रकार के चित्र तथा पुराने समाचारपत्रों की प्रतियां हैं। विशेष रूप से सिंधु घाटी सभ्यता के सम्बन्ध में जो सामग्री है वैसी तो भारत में भी मिलना कठिन है। ये सब इतिहास के किसी भी विद्यार्थी के लिये बहुमूल्य सामग्री के रूप में अध्ययन के लिए प्राप्त हैं।

पांच हजार साल पुरानी चीजें

बेबीलोनिया और असीरिया की पुरातन सामग्री ईसा से तीन हजार वर्ष से भी पुरानी वहाँ मिल जाती है। श्रीलंका की ११वीं और १०वीं शताब्दी की कुछ कांस्य मूर्तियाँ बड़ी आकर्षक हैं।

पत्थर युग के कक्ष में आकर तो शायद उन विचारकों को जो आधुनिक सभ्यता की सभी स्थापनाओं से सहमत नहीं यह सोचने को बाध्य होना पड़ता है कि उक्त काल विभाजन में कुछ सच्चाई अवश्य है।

पाण्डुलिपियों के कक्ष में १२२५ ई० में लिखे मैगनाकार्टा की एक मूल प्रति भी देखने को मिल जाती है। यह राजा जान द्वारा लिखी तीन प्रतियों में से एक है। महाकवि शेक्सपियर द्वारा लिखा गया एक विक्रीनामा भी है, जो उनकी आर्थिक स्थिति का परिचायक है। विलियम शेक्सपीयर ने तंगदस्ती की हालत में अपना एक मकान केवल साठ पौंड में गिरवी रखा था। उनके हस्ताक्षरों का वह दस्तावेज भी वहाँ सुरक्षित है। जार्ज बर्नार्ड शा के अनेक पत्र भी वहाँ हैं जिनके आधार पर अब तक उस महान साहित्यकार के सम्बन्ध में अनेक पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं।

संग्रहालय में तीन घंटे व्यतीत करके भी मैं यह कहने की स्थिति में नहीं हूँ कि मैंने वहाँ की सभी चीजें देख लीं।

विंडसर कासल

एक दिन ईटन शिक्षा संस्था देखने के बाद हमें विंडसर

कासल जाने का अवसर मिला। उन दिनों ब्रिटेन की महारानी इसी पुराने किले में निवास कर रही थीं और यहीं पर हमारे प्रधानमन्त्री श्री नेहरू ने जब पिछली बार वह प्रधानमन्त्री सम्मेलन में भाग लेने लन्दन गये हुए थे तो उनके साथ भोजन किया था।

यह पुराना गढ़ पिछले ८०० वर्ष से भी अधिक समय से ब्रिटिश राजा रानियों का प्रधान निवास स्थान रहा है।

लन्दन से कोई २१ मील दूर एक पहाड़ी पर बना यह राजभवन कई एकड़ में फैला है। एक ओर महारानी का निवास है तो दूसरी ओर उद्यान है। उसमें तरह-तरह के फूल मानो वहाँ रखी बड़ी-बड़ी तोपों पर हँसते हों क्योंकि आज हिंसा के ये उपकरण वास्तव में शान्ति के प्रतीक फूलों के आगे उपहास की ही वस्तु बन गये हैं। पड़ोस में टेम्स बहती है और वह मानो लन्दनवासियों के लिये वरदान है। इस किले को देखकर हमें अपने देश के अनेक गढ़ों की याद हो आयी। यह भी स्मृतिपटल पर छा गया कि जिस जमाने के किले हैं उस समय सुरक्षा की महिमा और भावना क्या थी।

हेम्पटन कोर्ट भवन

विंडसर कासल से लौटकर दिन का तीसरा पहर हेम्पटन कोर्ट राज भवन देखने में व्यतीत किया। यह भवन हेनरी अष्टम के शासनकाल में यार्क के आर्चबिशप टामस वूल्ज़ ने बनवाया था। बाद में वूल्ज़े इंग्लैण्ड के लार्ड चांसलर भी हो



गये थे। अपने समय में वह सबसे अधिक प्रभावशाली, शक्तिशाली, और धार्मिक व्यक्ति थे, किन्तु कुछ ही वर्षों बाद वह प्रभावहीन हो गये। अपनी पुरानी शक्ति को पुनः प्राप्त करने के लिए उन्होंने तत्कालीन महाराजा हेनरी अष्टम को यह राज भवन भेंट किया, किन्तु ३० अक्तूबर १५२६ को उनकी समस्त सम्पत्ति जब्त कर ली गयी। यद्यपि चार मास बाद ही उन्हें शाही क्षमादान प्राप्त हो गया किन्तु उनके शत्रु शाही दरबार के इतने निकट हो गये थे कि अगले नौ मास बाद ही उन्हें घोर राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया और जब उन्हें लन्दन लाया जा रहा था मार्ग में उनकी मृत्यु हो गयी।

इस राजभवन में एडवर्ड अष्टम के बाद अनेक राजा रानियों ने अपने दरबार लगाये। इसीलिए इसके सभी आलीशान कमरों में बड़ी-बड़ी तस्वीरें कालीन और आरामदेह सामान हैं। राजाओं के लिए ऊपर जाने का जो जीना है वह देखने योग्य है। शृंगारदान सोने के कमरे आदि सभी पुरानी नवाबदारी के नमूने हैं।

भुतहा गलियारा

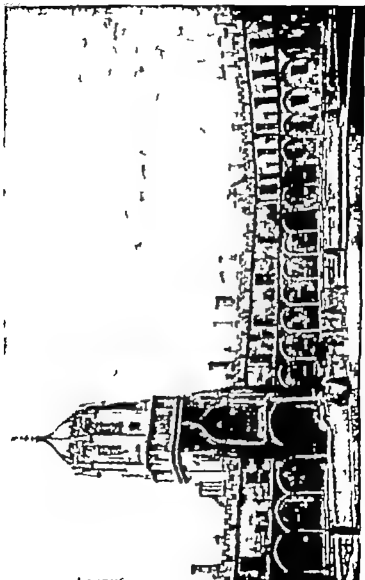
अनेक कमरों में से निकलते हुए जब हम एक गलियारे में पहुँचे तो वहाँ लिखा देखा 'भुतहा गलियारा'। इसका यह नाम इसलिये पड़ा बताया जाता है कि हेनरी अष्टम की पाँचवीं रानी कैथराइन हावर्ड का प्रेत इस गलियारे में घूमता फिरता चैपल की ओर जाता हुआ देखा गया। विवाह के सिर्फ १६

मौसम सुहावना था । जब हम ईटन पहुँचे तो वहाँ विशेष चहल-पहल दिखायी दी । मालूम हुआ कि ब्रिटन की महारानी और उनके पति एडिनबरा के ड्यूक ईटन की शिक्षण संस्था देखने आये हुए हैं, इसलिए हमें बाहर ही रुक जाना पड़ा । अफवाहें यह थीं कि शायद प्रिंस आफ वेल्स राजकुमार चार्ल्स को उसी स्कूल में पढ़ने के लिये भेजा जायगा ।

दो घंटे हम इधर-उधर घूमते रहे और जब १२ बजे महारानी की कार हमारे सामने से रवाना हो गयी तब हम ईटन के उस पुराने भवन में प्रविष्ट हुए ।

ईटन जैसा कि हमने लिखा, पाँच सौ वर्ष से भी अधिक पुरानी संस्था है । इसमें ब्रिटन के अनेक सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ तैयार हुए हैं । ब्रिटन के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री मेकमिलन यहाँ ही पढ़े हैं । भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री एंथनी ईडन भी यहीं के छात्र रहे थे ।

प्राचीनताप्रेमी ब्रिटनवासियों ने यहाँ की इमारतों को भी उसी रूप में रहने दिया है, जैसी कि वे सबसे पहले बनी होंगी । पुराना फाटक जर्जर हो गया है कई दीवारें बिल्कुल गस्ता हालत में हो गयी हैं । विद्यार्थियों की पोशाक भी वही पुराने जमाने की चली आ रही है । काले रंग गले का लम्बे कोट काली वास्कट और धारीदार पतलून सफेद कमीज पर गले में काली टाई ऐसा लगता था मानो मक्खियों पचीस चारों ओर घूम रहे हों । किन्तु उस पोशाक में गोरे चमचमाते किशोर



चेहरे बड़े भले लग रहे थ । वातावरण शांत और शालीन था ।

ईटन में प्रवेश प्राप्त करना बहुत मुश्किल है । बातचीत में वहीं एक बुजुर्ग अंग्रेज ने हँसकर कहा—'जनाब कभी-कभी तो लोग बच्चे के जन्म से पहले ही उसका नाम रजिस्टर करा देते हैं ।' इससे यह पता चलता है कि वहाँ पर शिक्षा का स्तर और वातावरण कैसा होगा कि लोग महगा स्कूल होते हुए भी अपने बच्चों को उसी में पढ़ाना चाहते हैं ।

हैरो जहाँ प० जवाहरलाल नेहरू पढ़े थे हम न जा सके । यह स्कूल भी इस बात पर गर्व कर सकता है कि वहाँ ब्रिटेन और विदेशों के कई बड़े राजनेता शिक्षित हुए थ । ब्रिटन के अति लोकप्रिय एव प्रभावशाली प्रधानमन्त्री विंस्टन चर्चिल न भी वहाँ शिक्षा पायी थी ।

आक्सफोर्ड में एक दिन

समय की तगी के कारण हमारे सामने यह विकल्प था कि या तो आक्सफोर्ड देख लें या केम्ब्रिज । यही दोनों विश्व-विद्यालय यहाँ के प्राचीनतम विद्यालय हैं । हमने आक्सफोर्ड जाने का निश्चय किया और अगले दिन यानी सोमवार को हम आक्सफोर्ड पहुँचे ।

ब्रिटन में विश्वविद्यालय जन्म की कहानी बड़ी दिलचस्प है । सन् ११६७ में जब पेरिस विश्वविद्यालय ने विदेशी विद्या-र्थियों को अपने यहाँ से निकाल दिया तब आक्सफोर्ड विश्व-

विद्यालय की नींव पड़ी और कम्ब्रिज की स्थापना हुई १२०९ में, जब आक्सफोर्ड से बहुत से विद्यार्थी निकलकर वहाँ पहुँचे। इससे पूर्व ब्रिटन में कोई विश्वविद्यालय न था।

आक्सफोर्ड रेल सड़क और नदी से होकर पहुँचा जा सकता है। टेम्स से जाना सर्वोत्तम है। किन्तु हमें सड़क से जाने में भी कम आनन्द नहीं आया। रास्ते भर चारों ओर हरियाली ही हरियाली दिखायी देती थी। ऐसा लग रहा था मानो प्रकृति ने प्रसन्न होकर हरे कालीन बिछा दिये हैं। मैं सोचता जा रहा था कि उन कालीनों के लिए ब्रिटन-वासियों को कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती अलावा इसके कि सफाई सुथराई का ध्यान उन्हें हर क्षण बना रहता है। अन्यथा हरियाली तो वहाँ के मौसम की कृपा है। गर्मी कभी ज्यादा पड़ती नहीं, इसलिए हरियाली के सूखने का कभी अवसर नहीं आता।

हमारे साथ एक ऐसे अंग्रेज सज्जन भी थे जो आक्सफोर्ड में स्वयं तीन-चार साल शिक्षा प्राप्त कर चुके थे। उन्होंने इतने प्रेम और श्रद्धा से उस ज्ञान के आलोक के दर्शन कराये कि शायद हम अकेले उतना आनन्द न ले पाते।

प्राचीन एवं अर्वाचीन

अनेक कालिज पुस्तकालय नाट्यशालाएँ, गिरजाघर और छात्रावासों के ऊँचे ऊँचे गुम्बद दूर से ही दिखायी देने लगते हैं। उनमें अधिकांश का रूप प्राचीन है। वहाँ सेक्सन

वास्तुकला की झलक दिखायी देती है तो आधुनिक साधनों का प्रयोग भी प्रचुरता से मिलता है।

शुरू में हम बेलियल कालिज देखने गये। यह प्रारम्भ में स्थापित तीन कालिजों में से एक है। इसकी अधिकांश इमारत उन्नीसवीं शती में पुनर्निर्मित हुई है। किन्तु फिर भी मध्ययुग के बहुत से अवशेष, पुस्तकालय और पुराने हॉल विद्यमान हैं जिनसे उसका प्राचीन रूप नष्ट नहीं हो पाया है। हॉल में अनेक राजनेताओं के बड़े आकार के चित्र लगे हैं। इनमें लार्ड कर्जन लार्ड आक्सफोर्ड और एस्क्विथ के चित्र भी हैं।

दूसरी ओर ट्रिनिटी कालिज है जो १५७१ में स्थापित हुआ था। इसमें वेल्स से आये विद्वानों के लिए ज्ञानार्जन की विशेष व्यवस्था है। मैथोडिस्ट आंदोलन के प्रवर्तक जान वेज्ली ने लिंकन कालिज की स्थापना की थी। १५ वीं शती का हाल वैसा का वैसा ही है। पास के उन कमरों में जहाँ वेज्ली रहते थे उनकी बहुत सी चीजें आज तक सुरक्षित हैं।

एक विशेषता

ब्रिटन की उदारता का परिचय हमें न्यू कालेज के पास के गिरजाघर में लगे एक शिलालेख से हो जाता है। इस शिलालेख में प्रथम महायुद्ध (१९१४–१९) में काम आये उन जर्मन विद्यार्थियों के नाम श्रद्धापूर्वक खुदे हुए हैं जो युद्ध में ब्रिटन के विरुद्ध लड़े थे। शिलालेख में लिखा है

उन पुरुषों की याद में, जो विदेश भूमि से यहाँ आये

संसद् और राजनीतिक दल

ब्रिटेन का कोई लिखित संविधान नहीं है। सब काम परम्परा से चलते हैं किन्तु ये परम्परायें इतनी स्वस्थ और सशक्त हैं और इनमें ब्रिटेन निवासियों को इतनी आस्था है कि इनको लिपिबद्ध करने की आवश्यकता उन्हें आज तक अनुभव नहीं हुई।

ब्रिटिश संसद लोकशाही का आदर्श रूप मानी जाती है। वह अपने बनाये नियमों से चलती है। इसके तीन तत्व हैं— एक रानी दूसरा राज्यसभा (हाउस आफ लार्ड्स) और तीसरा लोकसभा (हाउस आफ कामन्स)।

ब्रिटेन में रानी की स्थिति सर्वोपरि है फिर भी वह सीधे राज्य नहीं करती। कहना चाहिये कि ब्रिटेन में राज्य रानी का है किन्तु शासन उनकी सरकार करती है। इसका मतलब यह नहीं कि संसदीय प्रणाली में उनका कोई भाग हो न हो। मन्त्रिमंडल के सदस्य उनके कर्मचारी और परामर्शदाता के रूप में काम करते हैं। वे रानी के मंत्री कहलाते हैं और उन्हें उनके पद की मुहर रानी के हाथों से ही प्राप्त होती है। न्यायाधीश रानी के नाम से न्याय करते हैं। समस्त सेना



पार्लमेंट भवन

रानी की सेना कहलाती है। शाकिय रानी की डाक बाँटते हैं। नागरिक (सिविल) कर्मचारी प्रथम विभागीय मंत्रियों के नहीं रानी के सेवक कहलाते हैं। यहाँ तक कि संसदीय प्रतिपक्षी दल को 'रानी का प्रतिपक्षी दल' पुकारा जाता है।

राज्यसभा

राज्यसभा में सदस्यता सदा परम्परा से चलती है। ये सदस्य राजकुमार सरदार तथा शाही परिवार के सम्बन्धी ही होते हैं जैसा कि हाउस ग्राफ़ लार्डस नाम से ही प्रकट है। १६१६ में इस सदन की कुल सदस्य संख्या ८८५ थी। इनमें अध्यापक पीयर, इंगलैंड स्काटलैंड, आयरलैंड एवं आजीवन सदस्य हैं। क्योंकि इस सदन के सदस्य मौरूसी हुक रखते हैं इसलिए वे लोकसभा की सदस्यता के लिए चुनाव नहीं लड़ सकते। जहाँ तक इन सदस्यों के अधिकार का सम्बन्ध है १६११ में इनका निषेधाधिकार समाप्त हो गया था। १६४६ में पुनः कानून बना और विधेयकों के दिन देरी का समय दो वर्ष से कम करके एक वर्ष कर दिया गया। वास्तव में इस सदन का उपयोग निर्वाचित सदन से स्पर्धा करना न होकर अपने अनुभव का लाभ पहुँचाना ही है।

राज्यसभा में ऐसे व्यक्तियों के लिये भी स्थान रखा जाता है जिनका परामर्श देने के लिये हितकर हो। ऐसे व्यक्ति राजनीतिक दलों से सम्बद्ध नहीं होते। राज्यसभा का अध्यक्ष लार्ड चांसलर कहलाता है। उसके बैठने का स्थान एक दीवान पर होता है कुर्सी पर नहीं। उसके सामने दायें और बायें

दोनों ओर दो लम्बे दीवान पड़े रहते हैं जिन पर कोई नहीं बैठता। लार्ड चांसलर के आसन के पीछे एक लम्बी चौड़ी कुर्सी है जिस पर संसद के उद्घाटन के समय रानी बैठती हैं। उनके ठीक सामने कमरे के अन्त में एक कठघरा-सा बना है जिसमें रानी के भाषण के समय लोकसभा के अध्यक्ष आकर खड़े हो जाते हैं। उनके दाहिनी ओर प्रधानमंत्री और बायीं ओर विरोधी दल के नेता खड़े होते हैं बैठते नहीं। उनके पीछे द्वार तक जो थोड़ा-सा स्थान बचा हुआ है वहाँ लोक-सभा के कुछ सदस्य खड़े हो जाते हैं। ऐसा लगता है मानो आज भी लार्डों को सामान्य सदस्यों का अपने बराबर बैठना भला न लगता हो।

राज्यसभा का एक महत्वपूर्ण कार्य और भी है। समस्त संयुक्त राज्य (यूनाइटेड किंगडम) के सिविल मामलों की अपील सुनने के लिये यह सर्वोच्च न्यायालय है और इंगलैंड वेल्स तथा उत्तरी आयरलैण्ड के फौजदारी मुकदमों की अंतिम अपील भी यहीं सुनी जाती है।

वैसे तो राज्यसभा के अधिवेशन में सभी सदस्यों को उपस्थित रहना चाहिये किंतु व्यवहार में ऐसा होता नहीं है संभव भी नहीं है क्योंकि सदन में बैठने का स्थान कम है। अगर संयोग से सभी सदस्य आ जायें तो शायद उन्हें खड़े रहने का स्थान भी न मिले।

लोकसभा

लोकसभा में सदस्यों की संख्या ६३० है। ५११ इंगलैंड,

३६ वेल्स ७१ स्कॉटलण्ड और १२ उत्तरी आयरलण्ड से हैं। इस सदन के सभी सदस्य वयस्क मताधिकार के आधार पर चुने जाते हैं। सदस्यता के लिये जाति वर्ग आय अथवा पेशे की कोई पाबन्दी नहीं है। राज्यसभा की भाँति इस सदन में भी सब सदस्यों के बैठने के लिये स्थान नहीं है।

अध्यक्ष के बैठने के लिये कुर्सी की व्यवस्था है। सामने एक मेज है और दायें और बाएं दोनों ओर सदस्यों के बैठने के लिये आरामदेह बेंचें पड़ी हुई हैं। दाहिनी ओर सरकारी बेंचें हैं। पहली बेंच पर सबसे पहले जिस दल की सरकार होती है (आजकल कंजरवेटिव दल) उसका मुख्य सचेतक बैठता है। उसके बराबर सदन का नेता (आजकल श्री बटलर) बैठता है। तब प्रधानमन्त्री का स्थान होता है बाईं ओर की बेंच पर सबसे पहले विरोधी दल (आजकल लेबरपार्टी) का मुख्य सचेतक और उसके बाद नेता (श्री गेटसकल) का स्थान है।

दोनों ओर की बैंचों के बीच में काफी फासला है। मोटी लाल रेखाएं दोनों ओर खिंची हुई हैं। इन्हें देखकर अनायास ही मेरे मुँह से निकल गया कि ये 'लक्ष्मण रेखा' कहला सकती हैं क्योंकि विवाद में भाग लेते हुए दोनों ओर के किसी भी सदस्य को यह रेखा पार नहीं करनी चाहिए, ऐसी परम्परा चली आ रही है। जब मैंने अपने मेजबान लोकसभा के सदस्य से इसका कारण पूछा तो उन्होंने बतलाया कि ऐसा लगता है कि जब सदस्य तलवारें बाँधकर सदन में आते होंगे तब यह

देखकर कि बीच में इतना फासला जरूर रहना चाहिये जिससे अगर गुस्से में आकर वे अपनी तलवारें खींच लें तो तलवारें आपस में टकराएँ नहीं इसीलिए यह फासला रखा गया है।

११ जुलाई '६० सोमवार को हम संसद के दोनों सदन देखने गये थे। उस दिन विरोधी दल के नेता श्री गेट्सकल ने कांगो में ब्रिटिश प्रजाजन की सुरक्षा के सम्बन्ध में प्रश्न पूछा था। कटंगा के प्रधानमन्त्री ने सहायता माँगी थी। उसके बारे में भी प्रश्न किया गया था। प्रधानमन्त्री ने इसका समुचित उत्तर दिया था। उस दिन सदन में बड़ी गर्मी दिखायी दे रही थी जो अब बहुत दिनों से प्रायः नहीं होती थी।

संसद भवन

संसद भवन में हमने पूर्व की ओर से प्रवेश किया था। घुसते ही बायें हाथ पर वह पुराना हॉल है जहाँ कभी राजा चार्ल्स और भारत में पहले अंग्रेज गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स पर मुकद्दमें चलाये गये थे। संसद के भीतर सबसे पुराने बने भवन से लेकर द्वितीय महायुद्ध काल में ध्वस्त होने के बाद बने नवीनतम हिस्से को भी हमने देखा।

दोपहर का भोजन संसद सदस्या के साथ वहीं किया। अपराह्न में २ बजकर २८ मिनट पर पुराने प्रकार के परिधान पहन स्पीकर का जुलूस भी हमने देखा जो अधिवेशन के दिनों में रोज ही निकलता है।

राज्यसभा और लोकसभा दोनों के नामों का अन्तर सदनों के देखने से पता लग जाता है। एक दिलचस्प बात यह मालूम

हुई कि राज्य सभा में अध्यक्ष पद पर सामान्य व्यक्ति भी चुना जा सकता है क्योंकि अध्यक्ष का आसन वास्तव में सदन की सीमा से कुछ बाहर है किन्तु इस पर आसीन व्यक्ति को वास्तव में हमेशा लार्ड बना दिया जाता है।

राज्यसभा का कोई सदस्य भले ही वह मन्त्री हो लोक-सभा में नहीं जा सकता। यहाँ तक कि राजा रानी भी लोक सभा के नियमों के अनुसार इस सदन में प्रवेश नहीं कर सकते। जब कभी शाही घोषणा लेकर रानी का कोई प्रतिनिधि लोक सभा को देने आता है तो प्रवेश द्वार में बने एक झरोखे से ही वह उक्त सूचना दे देता है। कहते हैं एक बार राजा चार्ल्स लोकसभा में पहुँच गये थे और उन्होंने अनुपस्थित सदस्यों पर कुछ जुर्माना भी कर दिया था। उसके बाद से लोकसभा ने उपरोक्त नियम बना दिया है।



स्कॉटलैंड यार्ड में कुछ घटे

स्कॉटलैण्ड यार्ड के नाम में इतना जादू है कि ब्रिटेन में ही नहीं भारत में भी अनेकों जासूसी उपन्यास उसके नाम पर लिखे जाते हैं। वास्तव में स्कॉटलैण्ड यार्ड अथवा मेट्रोपोलिटन पुलिस ब्रिटेन का वह स्थान है जहाँ सभी पुलिस का सदर मुकाम है और जो वैज्ञानिक उपायों द्वारा अपराधी और अपराधों की खोजबीन करता है।

एक ओर अपराधी जहाँ अपनी चतुराई से नये-नये प्रकार के अपराध करने की ओर प्रवृत्त होते हैं वहाँ दूसरी ओर विज्ञान के उपकरणों की सहायता से अपराध शोध विभाग उन्हें गिरफ्तार करने और अपराधों की मनोवैज्ञानिक खोजबीन करने में लगता है।

स्कॉटलैण्ड यार्ड संसार में सबसे महत्त्वपूर्ण संस्था है जहाँ अपराध शोधकार्य किया जाता है। इसीलिये यह धारणा बलवती हुई है कि स्कॉटलैण्ड यार्ड में कोई शिकायत पहुँचने पर उसका निराकरण वहाँ अवश्य हो जाता है वैसे यह धारणा सोलह आने सच भी नहीं है। इसमें कोई शक नहीं कि वहाँ वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक प्रणाली से हर मामले की तह तक



स्कॉटलैण्ड यार्ड का सूचना कक्ष

पहुँचा जाता है और राजाना ही सैकड़ों मामले पहुँचने पर भी काम कुशलता में कोई गतिहीनता नहीं आती।

सूचना कक्ष

एक दिन सुबह ही जब हम वहाँ पहुँचे तो न्यू-स्कॉटलैण्ड यार्ड के उस बड़े भवन में एक मुस्कराते हुए व्यक्ति ने हमारा स्वागत किया। सबसे पहले वह हमें सूचना-कक्ष में ले गया जहाँ अनेक रेडियो जैसे यंत्र लगे हुए थे और जहाँ हर क्षण छोटे से छोटे अपराधों अथवा अपराध होने की आशंका के समाचार प्राप्त हो रहे थे। यह 'रिसीविंग स्टेशन' बड़ी दिलचस्प जगह है। यहाँ पर लगभग तीन हजार सूचनायें प्रति दिन प्राप्त होती हैं। कोई शिकायत करता है कि मेरे यहाँ चोरी हो गयी, नकब लग गया, ताला टूट गया या मोटर गायब हो गयी, कोई दुर्घटना की सूचना देता है और कोई मारपीट की। हत्याओं की सूचनायें भी प्राप्त होती रहती हैं। तत्क्षण मोटर साइकल, मोटर और वनों को बेतार के तार से सूचित किया जाता है कि वे अमुक स्थान पर पहुँच कर मामले की छानबीन करें। इसमें कभी भी चन्द मिनटों से अधिक नहीं लगते। प्रायः पुलिस का दस्ता घटनास्थल पर १० मिनट में ही पहुँच जाता है।

पुलिस की ऐसी मोटर सायकलें, मोटरें आदि नगर में बराबर घूमती रहती हैं और जो घटनास्थल के सबसे निकट होती है उसे केन्द्र से बेतार द्वारा सूचित कर दिया जाता है।

बेतार की व्यवस्था लन्दन में टक्सियों में भी है। कोई व्यक्ति टक्सी मगाने के लिए फोन करे तो उसके केन्द्र से बेतार द्वारा निकटवाले टक्सी ड्राइवर को सूचना दे दी जाती है कि वह फौरन वहां पहुंच जाय और वह पहुंच भी जाता है। इससे जहां एक ओर पट्रोल की बचत होती है वहां टक्सी बेकार नहीं घूमती और उन्हें दूर-दूर से खाली नहीं लौटना पड़ता टक्सी मगानवालों को भी वे जल्दी ही मिल जाती हैं।

जो सूचनायें सूचना-कक्ष में प्राप्त होती हैं उनके आधार पर हर महीने कोई डेढ़ हजार व्यक्ति गिरफ्तार किये जाते हैं। उनसे पूछताछ में मार-पिटाई का व्यवहार नहीं किया जाता। वे लोग जानते हैं कि पुलिस सच्चाई की तह तक पहुंच जाना चाहती है इसलिये पूछने पर मालूम हुआ कि अपराधी भी मामले को खोलने में पूरी-पूरी मदद करते हैं।

एक अभिनव तरीका

अपराध निरोध का एक वैज्ञानिक तरीका और भी अपनाया गया है। ऐसे छः हजार यंत्र बको आदि में लगा दिये गये हैं जिन्हें कोई आसानी से नहीं देख सकता। जैसे ही कोई व्यक्ति उस स्थान में प्रवेश करता है वे यंत्र ग्रामोफोन की तरह चिल्लाने लगते हैं कि 'चोर यहां घुसा है यह स्थान अमुक है मदद भेजिये' वह अपना टेलीफोन नम्बर भी बता देते हैं। यह शोर घटनास्थल पर नहीं बल्कि स्कॉटलैण्ड यार्ड के एक कमरे में होता है और फौरन ही पुलिस दस्ता उस स्थान

पर पहुँच जाता है। कई बार ऐसा भी होता है कि जब कोई सफाई करनेवाला अथवा अन्य अधिकारी वहां पहुँचता है तब भी यन्त्र निस्तान लगता है और जब कुछ ही देर में पुलिस वहाँ पहुँचती है तो उस वास्तविक स्थिति का पता चलता है। एस यन्त्रों ने अपराध निरोध में बड़ी सहायता पहुँचायी है।

मोटरों के खो जाने की रिपोर्टें काफी होती हैं। कभी-कभी तो बड़ी दिलचस्प घटनायें हो जाती हैं। हमें बताया गया कि एक साहब सुबह दफ्तर जाने के लिए जब गैरेज में पहुँचे तो उनकी मोटर वहां न थी। उन्होंने फौरन यार्ड को फोन पर सूचना दे दी। वह तो फोन करके दफ्तर चले गये लेकिन यार्ड की मुसीबत हो गयी। फौरन बेतार के तार से नगर भरके मोटर-दस्तों को सूचना दे दी गयी कि अमुक नम्बर की अमुक कम्पनी की मोटर जहां भी मिले फौरन रोक ली जाय और खबर दी जाय। कुछ ही देर में मोटर एक स्थान पर खड़ी मिल गयी। मालिक को सूचना दे दी गयी कि आप की मोटर वहां खड़ी है।

इस मामले की छानबीन हुई। वास्तव में मोटर की चाबी मालिक की उस दिन पहन कोट की जब में ही निकल आयी। पुलिस के अनुसार तथ्य यह निकला कि मोटर-मालिक शाम को घर से घूमने निकले। उन्होंने कोशिश की कि जहाँ वह शराब पीते हैं उस बार के ठीक सामने ही कार खड़ी कर दें लेकिन वहाँ जगह न थी। इसलिये उन्हें एक दूसरी जगह गली में गाड़ी खड़ी करनी पड़ी। पी-खाकर वह निकले और अपने

एक दोस्त के साथ घर पहुँच गये। सुबह गाड़ी न वहाँ थी न मिल सकती थी। सफर की हालत में पिछली शाम क्या गुजरा उसका उन्हें ध्यान ही न रहा। हमें बताया गया कि मोटर मालिक को यह सब समझाने के लिए पुलिस को भाग दौड़ करनी पड़ी। मैं सोच रहा था कि हमारे देश में गलत रिपोर्ट लिखाने पर नतीजा शायद कुछ और ही निकलता। लेकिन वहाँ पुलिस यह समझती थी कि उक्त सज्जन ने गलतफहमी में रिपोर्ट कर दी है पुलिस को परेशान करने के ख्याल से नहीं।

जासूस कुत्ता

अपराधियों को पकड़ने के लिए कुत्तों का इस्तेमाल हमारे देश में भी किया जाता है। कुत्ते की स्वामिभक्ति और घ्राण शक्ति सदा से प्रसिद्ध रही है। स्काटलैण्ड यार्ड में इस काम के लिये प्रशिक्षित कोई ४०० ५०० कुत्ते हैं। उन कुत्तों को देख कर यह कहना अच्छा नहीं लगता कि वे सिर्फ पशु हैं। उनमें आदमी की सी समझ है और आदमी से अधिक घ्राण-शक्ति के कारण अपराधी को पहचानने की क्षमता है।

कुत्तों का प्रशिक्षण कोई छः हफ्ते का होता है जिसमें उनके साथ काम करनेवाले आदमियों को भी साथ रहना पड़ता है। यार्ड के सर्वेक्षण के अनुसार एल्सेशियन किस्म के कुत्ते इस काम के अधिक उपयुक्त होते हैं। उन कुत्तों को समय पर मालिश और भोजन दिया जाता है। उनके काम के घंटे भी नियत हैं।

अपराधी की कोई भी चीज कुत्तों को सुँघा दी जाती है और फिर वे उसी गंध के पीछे लगकर अपराधी तक पहुँच जाते हैं। इतना ही नहीं अगर अपराधी किसी जंगल में भी छिपा है तो वे उसे मजबूर करके अपने साथ पुलिस थाने तक ले आते हैं। मालूम हुआ कि वे दौड़कर अपराधी का पीछा करते हैं और ज्यों ही उसके निकट पहुँचते हैं तो उसकी पतलून का पांयचा या ओवरकोट का पल्ला पकड़ कर रोकते हैं काट कर नहीं। अगर अपराधी उनके साथ नहीं आता तब मजबूरी की हालत में वह उसके पैर में हलके-से दाँत गड़ाते हैं। अप राधी प्रायः यह समझते हैं कि कुत्ते के साथ उन्हें लौटना ही पड़ेगा इसीलिए दाँत गड़ाने का अवसर नहीं ही आता।

कुत्तों की मदद से हत्या के मामलों में मृत व्यक्ति का छिपाया हुआ शव भी बरामद कर लिया जाता है। खोये हुए बच्चे और माल भी जब आदमी तलाश नहीं कर पाते तो कुत्तों की सहायता ली जाती है और इस काम में भी वे अक्सर कामयाब होते हैं।

स्काटलैण्ड के एक पहाड़ी क्षेत्र में हमने देखा कि एक ऐसे ही प्रशिक्षित कुत्ते द्वारा भेड़ पालनेवाले चरवाहे ने २०० भेड़ों को, जो हमारी मोटर को देखकर चारों दिशाओं में तितर-बितर हो गयी थीं, १५ मिनट के भीतर पकड़ बुलवाया। हमने देखा कि जिस होशियारी से उस कुत्ते ने चौकीदार का काम अंजाम दिया शायद दस आदमी उतनी कुशलता से उतने कम समय में नहीं कर सकते थे।

उगलियों की छाप

उगलियों की छाप लेकर अपराधी का पता लगाने का कार्य सबसे पहले भारत में ही शुरू हुआ था। लगता है अप राधियों का पता लगाने के क्षेत्र में भारत में काफी समय पहले से यह काम हो रहा था और स्काटलैण्ड यार्ड ने यह कला हमसे ही बाद में सीखी।

हमारे शरीर से एक प्रकार का तेल निकलता है। जिस समय यह बात किसी भारतीय को पता लगी होगी तभी उसके दिमाग में उँगलियों के निशान लेने की बात आयी होगी। उँग लियों के पोरों में छोटी-छोटी रेखाएँ होती हैं जिन्हें ज्योतिष में चक्र, शंख, पद्म आदि नाम से पुकारा जाता है इनके बीच में जो बहुत ही छोटा-सा स्थान रहता है उसमें शरीर से प्राकृतिक रूप से निकलनेवाला तेल इकट्ठा हो जाता है। इसलिए जब उँगलियाँ कहीं पड़ती हैं तो उनकी छाप आ जाती है जो वैसे नंगी आँखों को तो दिखायी नहीं देती किन्तु वहाँ पर तेल का सूक्ष्म लेप सा होने के कारण उस पर एक विशेष प्रकार का चूर्ण डालने से वह उभर आती है और उसके फोटो का बड़ा आकार होने पर ये निशान स्पष्ट रूप से दिखायी देने लगते हैं। यह चूर्ण भी पहले भारत में ही बनाया जाता था।

स्काटलैण्ड यार्ड में अपराधियों की उँगलियों के निशानों का एक भंडार है। कहीं अपराध होने पर वहाँ पर प्राप्त उँग लियों की छाप को इन निशानों से मिलाकर देखा जाता है तो तुरन्त अपराधी का पता चल जाता है।

उँगलिया की छाप देखकर स्काटलण्ड के विशेषज्ञ तुरन्त यह बतलाने में समर्थ हैं कि जिस व्यक्ति की वह छाप है वह किस प्रकार का अपराध करने का आदी है। जैसे—वह ताले तोड़ने में माहिर है या नकब लगाने में हत्या जैसा अपराध वह कर सकता है अथवा नहीं, मोटरें उड़ाने या महिलाओं के बटुए छीनने की कला में वह कितना प्रवीण है। इस प्रकार का भविष्यवाणी ज्योतिष के आधार पर नहीं अपितु वैज्ञानिक अध्ययन के अनुभव के आधार पर ही की जाती है।

जब हमने इस बात को विस्तार से जानना चाहा तो उत्तर मिला कि यह सब अनेक उँगलियों के निशानवाले अपराधियों के जीवन के मनोवैज्ञानिक तथा शरीर विज्ञान के अध्ययन से ही पता चलता है उसके लिए बहुत समय और श्रम अपेक्षित है।

बड़े नक्शे

यार्ड के नक्शा-कक्ष में अनेक लम्बे चौड़े नक्शे हमने देखे। ये यातायात-दुर्घटना चोरी मोटर चोरी हत्या आदि के अलग अलग नक्शे हैं। लन्दन और उसकी पास की बस्तियों के भौगोलिक नक्शों पर जहाँ भी दुर्घटना चोरी आदि होती है एक पिन लगा दी जाती है। इससे यह पता रहता है किस क्षेत्र में कौन-सी और कितनी गड़बड़ हो रही है। जिस क्षेत्र में मोटर दुर्घटनाएँ अधिक होती दिखायी देती हैं, वहाँ यातायात का प्रबन्ध तदनुसार ठीक कर दिया जाता है। केवल एक ओर ही मोटरों का जाना अथवा निकट की किसी सड़क से याता

माल पारी कर देना आदि उपाय काम में लाये जाते हैं।

खास अपराधियों के कार्य क्षेत्रों के नक्शे भी होते हैं। पुलिस को मालूम रहता है कि कौन-सा अपराधी किस प्रकार के काम में प्रवीण है। तब उन नक्शों में जहाँ-जहाँ एक से अपराध होते हैं वे पिन लगा कर दिखा दिये जाते हैं। एक ऐसे ही अपराधी का जो ताला तोड़कर टलीविजन रेडियो घड़ियाँ जेवर आदि चुराता था एक नक्शा हमने देखा। उसे लन्दन का सबसे बड़ा ठग कहा जा सकता है क्योंकि कई बार पुलिस ने उसे पकड़ा और छोड़ देना पड़ा क्योंकि उसके विरुद्ध सबूत पूरा नहीं हो पाता था। यह जानते हुए भी कि अपराध उसी ने किया है पुलिस को खामोश रह जाना पड़ता था। एक-दो बार उसे अदालत तक भी भेजा गया किन्तु नतीजा कुछ न निकला वह छूट गया। लेकिन वह पुलिस की आँखों में अधिक दिन तक धूल न झोंक सका और उसे गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया।

लन्दन का ठग

उस ठग के काम करने का तरीका बड़ा दिलचस्प था। पूछने पर पता चला कि वह दो जुड़वाँ भाई थे। जिनकी सूरत-शक्ल भी करीब-करीब एक-सी थी। दोनों दो दूर स्थानों पर रहते थे। एक पश्चिमी लन्दन में चोरी करता तो दूसरा पूर्व में कई मील दूर रहकर चोरी के समय अपनी हाजिरी एसी जगह रखता कि वह यह सिद्ध कर सके कि चोरी के समय वह घटनास्थल से बहुत दूर था। इसलिए पुलिस जब अपराधी को संदेह में

गिरफ्तार करके पूछताछ करती तो कोई बड़ा सरकारी अफ-सर या अस्पताल का डाक्टर अथवा और कोई प्रामाणिक व्यक्ति शपथ लेकर यह कहने को आगे आ जाता कि वह उस समय उसके पास था। दोनों भाई सुविधानुसार अपना नाम भी बदल लेते थे। अगर पुलिस ने 'क' का चालान किया तो वह अपना नाम 'ख' बता देता और 'क' तो वास्तव में किसी दूर जगह होता ही था। इसलिए हमेशा पुलिस को मुह की खानी पड़ती।

जब दोनों भाई पकड़े गये तब दूसरे भाई से जरा-सी गलती हो गयी। कुछ दिन पहले ही उसके पैर की हड्डी टूट गयी थी और वह पलस्तर चढ़ाए एक अस्पताल में पड़ा था। पहले भाई ने जब हाथ मारा तो उसने अपना नाम तुरन्त बदल लिया और पुलिस फिर चक्कर में पड़ी। पुलिस को नाम बदलने के नाटक का भी पता मिल चुका था। इसलिए उसने खोजबीन जारी रखी और उसी सप्ताह एक बार शराबखाने में हुए झगड़े में फंस जाने के कारण पहले भाई की शिकायत थाने में दर्ज थी। उससे यह सिद्ध हो गया कि पैर टूटा भाई तो झगड़ा कर ही नहीं सकता था इसलिए उसी ने वह झगड़ा किया था और उसी ने चोरी भी की और नाम बदल लिया। बाद में उस अपराधी ने स्वयं ही सब स्वीकार कर लिया। इस प्रकार एक बड़े ठग का अपराधी जीवन सामने आया।

मात जारी कर देना आदि उपाय काम में लाये जाते हैं।

खास अपराधियों के काम नक्शों के मकले भी होते हैं। पुलिस को मालूम रहता है कि कौन-सा अपराधी किस प्रकार के काम में प्रवीण है। तब उस नक्शे में जहाँ-जहाँ एक से अपराध होते हैं वे पिन लगा कर दिखा दिये जाते हैं। एक ऐसे ही अपराधी का जो ताला तोड़कर टलीविजन रेडियो, घड़ियाँ जेवर आदि चुराता था एक नक्शा हमने देखा। उसे लन्दन का सबसे बड़ा ठग कहा जा सकता है क्योंकि कई बार पुलिस ने उसे पकड़ा और छोड़ देना पड़ा क्योंकि उसके विरुद्ध सबूत पूरा नहीं हो पाता था। यह जानते हुए भी कि अपराध उसी ने किया है पुलिस को खामोश रह जाना पड़ता था। एक-दो बार उसे अदालत तक भी भेजा गया किन्तु नतीजा कुछ न निकला वह छूट गया। लेकिन वह पुलिस की आँखों में अधिक दिन तक धूल न झोंक सका और उसे गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया।

लन्दन का ठग

उस ठग के काम करने का तरीका बड़ा दिलचस्प था। पूछने पर पता चला कि वह दो जुड़वाँ भाई थे। जिनकी सूरत-शक्ल भी करीब-करीब एक-सी थी। दोनों दो दूर स्थानों पर रहते थे। एक पश्चिमी लन्दन में चोरी करता तो दूसरा पूर्व में कई मील दूर रहकर चोरी के समय अपनी हाजिरी ऐसी जगह रखता कि वह यह सिद्ध कर सके कि चोरी के समय वह घटनास्थल से बहुत दूर था। इसलिए पुलिस जब अपराधी को संदेह में

गिरफ्तार करके पूछताछ करती तो कोई बड़ा मुख्तारे मुकसुर या अस्पताल का डाक्टर अथवा और कोई सार्वजनिक व्यक्ति शपथ खाकर यह कहने को आगे आ जाता कि वह उस समय उसके पास था। दोनों भाई सुविधानुसार अपना नाम भी बदल लेते थे। अगर पुलिस ने 'क' का चालान किया तो वह अपना नाम 'ख' बता देता और 'क' तो वास्तव में किसी दूर जगह होता ही था। इसलिए हमेशा पुलिस को मुँह की खानी पड़ती।

बेकर स्ट्रीट

बेकर स्ट्रीट के नाम से कौन परिचित न होगा। ब्रिटेन के डाक्टर सर आर्थर कौनन डोयल ने अपने जासूसी उपन्यासों में बेकर स्ट्रीट के सुप्रसिद्ध जासूस शरलक होम्स और डा० वाट्सन ऐसे दो सजीव चरित्र खड़े कर दिये हैं जिनके सम्बन्ध में आज यह समझना मुश्किल है कि वे सफल उपन्यासकार की दिमागी उपज ही थे सचमुच नहीं हुए।

सर आर्थर १८५९ में एडिनबरा में जन्मे थे और १९३० में उनका शरीरांत हुआ। उनकी मृत्यु के कुछ दिन बाद उनके प्रशंसकों ने उनके नाम पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। यह भी कैसी आश्चर्यजनक बात है कि झूठ-मूठ के जासूस शरलक होम्स से सम्बन्धित अनेक ऐसी चीजें जैसे उनका पाइप, उनकी छड़ी उनकी घड़ी उनके कपड़े आदि उस प्रदर्शनी में रखे गये। कुछ ही वर्ष पहले उस प्रदर्शनी के अनेक चित्र और विवरण ब्रिटेन और अमरीका के पत्रों में प्रकाशित हुए थे।

जिस किसी ने सर आर्थर के उपन्यास और कहानियाँ पढ़ी हैं उसके सामने होम्स एक ऐसे अपराध-विज्ञानी के रूप में सामने खड़े हो जाते हैं जिसने चतुर से चतुर अपराधी की चालाकियों को प्रकाश में ला दिया। मैंने जब स्काटलैण्ड यार्ड के एक अधिकारी से इस बारे में जिक्र किया तो वह हँस पड़े। उन्होंने बताया कि सर आर्थर एक सफल चिकित्सक तो थे ही अपराधियों के अदालती मामलों का भी सूक्ष्म अध्ययन करते

थे। उनमें असीम बुद्धि थी और सूझ-बूझ का तो कहना ही क्या। लेकिन लन्दन की बेकर स्ट्रीट पर शरलक होम्स नामक आदमी शायद कभी नहीं रहा होगा। जासूस शरलक होम्स थे ही कहाँ जो रहते। लेकिन उनके कारण बेकर स्ट्रीट को काफ़ी बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त हो गयी है।



स्कॉटलैंड यार्ड का इतिहास

जिस स्कॉटलैंड यार्ड अथवा मैट्रोपोलिटन पुलिस का वर्णन पाठकों ने पढ़ा है उसका इतिहास जानने में उनकी दिलचस्पी स्वभावतः होगी। आश्चर्य की बात यह है कि यह इतिहास अभी तक कहीं लिखा नहीं गया। कह नहीं सकते कि इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया अथवा गोपनीयता के कारण नहीं लिखा जा सका।

यहाँ जो कुछ भी लिखा जा रहा है वह इस दृष्टि से प्रामाणिक माना जा सकता है कि यह परिचय स्कॉटलैंड यार्ड के मुख्य अधिकारी द्वारा दिया गया है।

वैसे तो स्कॉटलैंड यार्ड का वर्तमान संगठन १८२९ के मैट्रोपोलिटन पुलिस कानून के अनुसार ही हुआ है और धीरे धीरे उसमें वृद्धि होती गयी है, किन्तु इसका श्रीगणेश १३वीं शती में ही हो गया था। उस समय एक सौ व्यक्तियों के ऊपर एक कांस्टेबल होता था। जरूरत पड़ने पर स्थानीय मिलिशिया की सहायता ले ली जाया करती थी। प्रारंभ में कांस्टेबल का पद अवैतनिक होता था क्योंकि उस पर काम का भार अधिक न था, किन्तु ज्यों-ज्यों समय बीता और अपराध



स्कॉटिशचर्च वार्ड का मुख्य द्वार

यह निकम्म तो उन्हें रोकने और अपराधियों को पकड़ने आदि का काम भी बढ़ा और इस प्रकार इस पद पर वेतनिक अधिकारी रखे जाने लगे।

बो स्ट्रीट रनर

गाँव में यह व्यवस्था ठीक चलती रही लेकिन शहरी क्षेत्रों में अपराधों के प्रकार बढ़ निकले अव्यवस्था का सामना भी करना पड़ा। टेम्स नदी द्वारा जो नावों में व्यापार होता था उसमें चोरी आदि के मामले सामने आने लगे और जो कांस्टेबल शहर में काम करते थे उनमें भ्रष्टाचार की शिकायतें भी मिलने लगी। तब यह सोचा गया कि कोई अन्य अच्छी व्यवस्था करने की जरूरत है। १८वीं सदी के कुछ लेखकों ने इन कांस्टेबलों के विरुद्ध आवाज उठायी। जब १७४६ में सबसे पहले 'बो स्ट्रीट' में हेनरी फील्डिंग ने कांस्टेबलों की एक सुगठित संस्था बनाने की प्रणाली का प्रारंभ किया तब से पुलिस का काम करनेवाले सभी लोगों को वेतन दिया जाने लगा और इन्हें 'बो स्ट्रीट रनर्स' नाम से पुकारा जाने लगा। शुरू में उन लोगों की संख्या कुल ३०० थी और उनका काम अपराध रोकने तक सीमित था।

१७४६ और १८२६ के बीच अपराध निरोधक दल व जासूसी दस्ते का काम बढ़ाने की ओर विशेष ध्यान दिया गया। 'बो स्ट्रीट रनर्स' का मुख्य काम अपराधों की खोज करना था। उनकी संख्या भी बहुत कम थी। १७८२ में गदन

लगाने का काम शुरू हुआ। शहर के अन्दर के क्षेत्र में पदल और बाहरी क्षेत्र में घुड़सवार पुलिस काम करने लगी। इसी बीच एक और पुलिस दस्ता काम करने लगा जो प्रमुख रूप से नदी के घाट पर होनेवाले अपराधों की खोज-बीन करता था। किन्तु पुलिस शब्द का प्रयोग सबसे पहले १७९८ में ही शुरू हुआ।

पुलिस शब्द का प्रारम्भ

२९ सितम्बर १८२९ से नयी पुलिस ने व्यवस्थित रूप से गश्त करना शुरू किया और १८३९ में मेट्रोपोलिटन पुलिस के सभी विभागों को इकजाई करने का कानून पास हुआ।

इस नयी व्यवस्था के आधार पर नगर निगम कानून बने और ऐसी ही व्यवस्था निगम और जिलों में शहरों में कर दी गयी। १८३० में १७ डिवीजन बनाये गये और पुलिस की कुल संख्या ३३५० हो गयी।

वर्तमान व्यवस्था इसी आधार पर है। इस समय नये स्कॉटलैंड यार्ड में पुलिस आयुक्त का प्रधान कार्यालय है जो मैट्रोपोलिटन पुलिस संगठन का प्रशासन करता है। आयुक्त के मातहत चार बड़े विभाग हैं जिनका एक सहायक आयुक्त इन्चार्ज होता है। पहला विभाग है आम प्रशासन का दूसरा यातायात तीसरा अपराध और चौथा संगठन एवं प्रशिक्षण। इस सदर मुकाम में एक सचिवालय है कानूनी विभाग है तथा एक बड़ा प्रयोगशाला भी है। इस प्रयोगशाला में विभिन्न

प्रकार के अपराधों और अपराधियों से सम्बन्धित प्रयोग सदा होते रहते हैं।

इस समय मेट्रोपालिटन पुलिस का कार्यक्षेत्र ७४२ वर्ग मील है और कुल मिलाकर निगम, जिले तथा नदी आदि पुलिस के २३ डिवीज़न हैं।

प्रशिक्षण

पुलिस भर्ती के लिये दो प्रशिक्षण स्कूल चल रहे हैं। एक हैण्डोन और दूसरा वेस्ट मिनिस्टर में। इन स्कूलों में जवानों को १३ सप्ताह की ट्रेनिंग दी जाती है। इसमें सफलता प्राप्त करने के बाद प्रारम्भ में प्रशिक्षार्थी को कुछ मास तक अनुभवी अफसरों के साथ रख दिया जाता है। ये विभिन्न विभागों में भेज जाते हैं और दो वर्ष तक अनुभव प्राप्त करने के बाद ही किसी विशेष शाखा में नियुक्त हो सकते हैं। ये विशेष शाखायें चार हैं। गुप्तचर, घुड़सवार, टम्स तथा गश्ती दस्ते।

घुड़सवार शाखा

पुलिस की घुड़सवार शाखा की शुरुआत १७६३ में सर जान फील्डिंग ने की थी, किन्तु सबसे पहले इनकी सफलता १८४८ में देखने को मिली जबकि हाइड पार्क में होनेवाली विभिन्न सभाओं में गड़बड़ी हो गयी थी।

घुड़सवार पुलिस अफसर के पास गश्त के समय एक

पिस्तौल तथा एक जोड़ी हथकड़ियाँ रहती हैं। पोशाक उनकी बड़ी चुस्त है। सिर पर काला चमड़े का टोप नीला कोट और नीली पतलून किन्तु सफेद चमड़े के दस्ताने और ऊँचे बूट सब मिलाकर एक सुन्दर और प्रभावोत्पादक रूप प्रदान करते हैं। कोट के नीचे बगनी वास्कट की झाँकी दिखायी देती है। लोग आपस में बात करते हुये पैदल पुलिस वाले को कॉप और घुड़सवार को रेडब्रेस्ट (लाल-सीना) कहकर पुकारते हैं। भीड़ पर काबू पाने के लिये एक घुड़सवार दर्जन भर पैदल पुलिस से ज्यादा अच्छा साबित होता है। इस समय घुड़सवार पुलिस में २२० आदमी और २०१ घोड़े हैं। इनकी भर्ती पैदल पुलिस में कम से कम दो साल कार्य करने के बाद ही हो सकती है और इनसे तीन साढ़े तीन घंटे प्रति दिन से अधिक काम नहीं लिया जाता।

घोड़ा पशु है। उसे सिखाने का काम बहुत मुश्किल है सदा यह डर बना रहता है कि शोर सुनकर अथवा भीड़ देखकर कहीं वह बिदक न जाय। इसलिये उसे प्रशिक्षित करते समय शुरू में माइक्रोफोन से संगीत सुनाया जाता है और भीड़ भी इकट्ठी की जाती है। धीरे धीरे घोड़ों के आगे असली बैंड बजाया जाता है और सिपाहियों की भीड़ सामने कर दी जाती है। जब उन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता तब जाकर उन्हें गश्त में भेजा जाता है। इस काम में सामान्यतः छ महीने लगते हैं।

घुड़सवार फौज के घोड़े और जवानों की बड़ी प्रशंसा है।

ब्रिटेन के राजा और रानी जब कभी फौज की सलामी लेने जाते हैं तो इनमें से ही एक घोड़ा उनकी सवारी के लिए चुना जाता है। महारानी जिस घोड़े पर सवारी करती हैं उसका नाम 'इम्पीरियल' है और एडिनबरा के ड्यूक के घोड़े का नाम 'एलमीन' है।



शेक्सपियर की जन्मभूमि में

कवि और नाट्यकार शेक्सपियर के नाम से अंग्रेजी पढ़े लिखे ही नहीं सामान्य हिन्दी पाठक भी परिचित हैं क्योंकि उस महान् साहित्यकार के प्रायः सभी नाटक हिन्दी में अनूदित हो चुके हैं। इसलिए जब मैं ब्रिटेन जाने का कार्यक्रम बना रहा था तो मैंने संयोजकों से यह इच्छा व्यक्त की कि और कहीं जाना हो या न हो पर शेक्सपियर की जन्मभूमि देखने जरूर जाना चाहता हूँ। और अगर सम्भव हो तो वहीं उस नाट्यकार का एक नाटक भी देखना चाहूँगा। ये दोनों बातें सम्भव हुईं, तभी तो मैं उन पर कुछ लिख रहा हूँ।

बर्मिंघम से कार द्वारा हम दोपहर को स्ट्रेटफोर्ड–अपॉन–एवान पहुँच गये। वैसे नाम तो उस कस्बे का स्ट्रेटफोर्ड ही है किन्तु ब्रिटेन में यह रिवाज है कि जिस नदी के तट पर कोई नगर होता है उसका उल्लेख भी किया जाता है। इस तरह एवोन नदी के किनारे होने से इसका पूरा नाम स्ट्रेटफोर्ड–अपॉन–एवोन कहा जाता है। १७ हजार की आबादीवाले इस कस्बे का सौन्दर्य अनुपम है। यों पुराने ढंग के मकान हैं। कुछ मकान और गिरजे तो पाँच सौ साल पुराने भी हैं। वहीं



शेक्सपियर का जन्मस्थान

पुरानी स्थापत्य कला दिखायी देती है। किन्तु सड़कें बेहद साफ़ सुथरी और होटल तथा घर आधुनिक साधनों से पूर्ण हैं।

यों तो इस कस्बे में शेक्सपियर जन्मे शिक्षा पायी और मृत्यु को प्राप्त हुए इसलिए अनेक स्थान ऐसे हैं जिनका उनसे सम्बन्ध है किन्तु इनमें से तीन स्थान प्रमुख हैं। एक वह पितृगृह जहाँ उनका जन्म हुआ दूसरा वह मकान जो उन्होंने खुद खरीदा और लन्दन से लौटकर इसी में अन्त समय तक रहे तथा तीसरा वह गिरजाघर जहाँ उनकी समाधि बनी हुई है। ये तीनों ही स्थान हम देखने गये।

तारीख का तो ठीक पता किसी को नहीं पर हेनले स्ट्रीट वाले ट्रस्ट द्वारा संरक्षित घर में उनका जन्म १५६४ में हुआ था। उनकी माता मेरी आर्डन और पिता जॉन शेक्सपियर साधारण स्थिति के गृहस्थ थे। उनके पिता स्ट्रेटफ़ार्ड की बारो के एक बार एक अधिकारी भी चुन गये थे।

विलियम शेक्सपियर के बाल्यकाल के बारे में अधिक जानकारी नहीं है किन्तु कस्बे के ग्रामर स्कूल में वह पढ़ने गये थे, यह बात पक्की है। १८ वर्ष की उम्र में उनका ऐन हथवे से विवाह हुआ और तभी वह लन्दन चले गये जहाँ एक नाट्यकार और मंचकार की हैसियत से उन्होंने प्रसिद्धि प्राप्त की।

जन्म गृह

शेक्सपियर के जन्म गृह की कहानी भी बड़ी दिलचस्प है। बात यह हुई कि शेक्सपियर के परिवार में लेडी बर्नार्ड

की १६७० में मृत्यु के बाद कोई सीधा वारिस न रहा और वह मकान बिक गया। १६ सितम्बर १८४७ का अखबारों में एक विज्ञापन निकला जिसमें कहा गया था कि शेक्सपियर का यह जन्म-गृह नीलाम होगा जो खरीदना चाहे खरीद ले। अफवाहें यह भी फैली कि कोई अमरीकी सज्जन उसे खरीदना चाहते हैं। अब स्ट्रेटफोर्ड में एक ट्रस्ट की स्थापना हुई और उसने तीन हजार पौंड में उसे खरीद लिया।

जब हम इस मकान को देखने गये तो स्वभावत यह प्रश्न ओठों पर आ गया कि क्या सबूत कि शेक्सपियर उसी मकान के उस कमरे में जन्मे थे जिसका परिचय यहाँ दिया जाता है? गाइड ने मुस्काते हुए उत्तर दिया— इस प्रकार की शंकाओं के कारण ही यहाँ एक दस्तावेज ऐसा रखा है जिस पर नगर निगम अधिकारी के हस्ताक्षर हैं। इस दस्तावेज में शेक्सपियर के पिता जॉन पर मकान के सामने कूड़ा डाल रखने के लिए कुछ जुर्माना किया गया था। इससे बड़ा सबूत और क्या चाहिए?

उस दो मंजिल मकान का रूप रंग पुराना है। घुसते ही एक दीवानखाना है। यह ऐलिजाबेथन समय के अनुरूप ही है। इसमें उसी ढंग की पुरानी मेज-कुर्सियाँ हैं आरामदायी समान है। इस कमरे के पास ही रसोई घर है। इसका रूप भी वैसा ही है जैसा उस जमाने में हुआ करता था। किन्तु इसमें एक नागर चीज दिखायी दी वह है एक बेबी-माइण्डर यानी चंचल प्रवृत्ति के बच्चे इधर-उधर भागकर गड़बड़ न करें और शैतानी

करके अंगीठी में न झुलस जायें इसलिए एक लोहे का बड़ा और भरा बीच के कमरे में गड़ा है जिससे कभी शेक्सपियर की मा ने उन्हें बाँधा होगा ।

संग्रहालय

इसके पास ही एक छोटा-सा संग्रहालय है जिसमें शेक्सपियर के तैल चित्र मूर्ति उनके नाटकों के प्रारंभिक संस्करण आदि है । ऊपर की मंजिल में उनका वंश-वृक्ष आदि है । इस कमरे में एक छोटी-सी मेज है कहा जाता है कि उसी पर बैठकर शेक्सपियर अपने स्कूल में पढ़ा करते थे, बाद को स्कूल से वह यहाँ मंगा ली गयी थी ।

जिस कमरे में शेक्सपियर का जन्म हुआ था उसका रूप तो बिलकुल पुराने समय का ही है । उसकी टेढ़ी-मेढ़ी छत की कड़ियाँ पुरानी टिम्बर की हैं । कहा जाता है कि उसमें कोई परिवर्तन नहीं किया गया है । एक किनारे कमरे को गर्म रखने के लिए अंगीठी है और पास ही एक पलंग पड़ा है । कमरे की शीशे की खिड़की पर खास-खास लोगों के हस्ताक्षर हो रहे हैं । इसका अर्थ यह हुआ कि ये लोग उस स्थान की यात्रा पर आते रहे हैं । इनमें सर वाल्टर स्काट, टामस कार्लाइल, इसाक वाट्स जान टूस हेनरी इर्विंग तथा ऐलन टेरी उल्लेखनीय हैं । जो पालना वहाँ रखा है कहते हैं शिशु शेक्सपियर उसी में आराम किया करते थे ।

मकान के पीछे सुन्दर वाटिका है । शेक्सपियर के नाटकों.

म जिन जिन फूलों और झाड़ियों का उल्लेख है ट्रस्टवालों ने वही फूल पौधे उस बाग में लगवा रखे हैं। वहाँ जाकर दर्शक का मन शेक्सपियर काल में पहुँच जाता है। ब्रिटेन की वर्तमान महारानी के राज्याभिषेक के समय एक खास तरह का गुलाब भी यहाँ लगाया गया था जो इस समय खूब फूल रहा है।

न्यू प्लेस

जन्म-गृह देखकर हम न्यू प्लेस देखने गये। यह वह मकान है जो १५९७ में शेक्सपियर ने स्वयं खरीदा था। इसका मूल बिक्री नामा भी सुरक्षित है। कुल ६० पौंड में वह स्थान उन्होंने खरीदा था और उस समय वह कस्बे के बड़े मकानों में से एक था। शेक्सपियर उस समय लन्दन में रहते थे और वहीं राज-दरबार में नाटकों के लेखन और अभिनय के लिए प्रसिद्ध हो चुके थे। यह मकान भी अब ट्रस्ट के संरक्षण में है।

शेक्सपियर लन्दन से अवकाश ग्रहण कर १६१० में इस नये मकान में अपने परिवार के साथ रहने के लिए अपने जन्म स्थान में पहुँचे। मरने से पहले उन्होंने एक वसीयत की और यह मकान अपनी बड़ी लड़की सूसन के हक में दे दिया। विधवा पत्नी अपनी पुत्री और जामाता डा० हॉल के साथ १६२३ तक जबकि उनका अन्तकाल आ पहुँचा उसी घर में रही थीं। इसी घर में १६४३ में प्रिन्स के राजा चार्ल्स प्रथम की महारानी मरिया तीन दिन ठहरी थीं।

उसके बाद कवि की दौहित्री एलिजाबेथ हॉल को यह मकान तरके में मिला। इसन टामस नेश के साथ विवाह कर लिया। १६७५ में उसकी और उसके पति की मृत्यु के बाद यह घर सर एडवर्ड वाकर ने खरीद लिया। और फिर उनकी लड़की के विवाह के बाद यह फिर क्लापटन परिवार के पास पहुँचा। १७०२ में सर जान क्लोपटन ने उसका पुनर्निर्माण किया।

कवि ने अपने हाथों से कुछ मलबरी के पौध वहाँ रोपे थे। वे फलते-फूलते रहे। उन्हें देखने के लिए दर्शक १८वीं शती तक वहाँ आते थे। किन्तु मकान-मालिक का रोजाना अनेक दर्शकों का वहाँ आना कष्टप्रद लगा। १७५६ में उन्होंने व झाड़ कटवा डाले। दो वर्ष बाद दुर्भाग्य से वह मकान नष्ट भ्रष्ट हो गया। १८६२ तक वह मकान पड़ोस के घर वालों के कब्जे में रहा। तब शेक्सपियर ट्रस्ट ने उसे खरीद लिया। वह मकान आज भी वाटिकोद्यान के रूप में मकान के सामने पड़ा है। और पास के उस मकान में वही पुरानी चीजें ज्यों की त्यों रखी हैं।

समाधि को नमस्कार

२३ अप्रैल १६१६ को शेक्सपियर का देहावसान हुआ। कस्बे के परिश चर्च ऑफ होली ट्रिनिटी में ५२ वर्ष पहले शिशु विलियम का बपतिस्मा हुआ था। हमने चर्च के रजिस्टर में बेपटिस्मा होने का उल्लेख अंकित देखा और मृत्यु को

तारीख भी लिखी थी। यह रजिस्टर चर्च में एक भार भाज भी रखे हुए हैं और दर्शक भाव से इन्हें देखते हैं।

एवोन नदी के तट पर यह पुराना चर्च आज भी सिर ऊँचा किये खड़ा है शायद इसलिए कि उसमें संसार का एक महान कवि चिर निद्रा में सोया पड़ा है। मृत्यु के कुछ महीने बाद ही कवि की समाधि का निर्माण हुआ। समाधि पर य प्रसिद्ध पंक्तियाँ लिखी हैं —

'यीशु का प्रिय मित्र यहाँ
धूलि के नीचे सोया है,
इन पत्थरों को यों ही रहने दो,
तुम्हें सवाब होगा।

उन स्थानों को देखकर ऐसा लगा कि काश हम भी अपने साहित्यकारों का सम्मान अपने देश में इस रूप में कर सकते कि उनसे सम्बन्धित स्थानों का संरक्षण होता जिसे देखकर पीढ़ियाँ और दर्शक कुछ प्रेरणा प्राप्त करते।



शेक्सपियर-रंगमंच

पिछले पन्नों में शेक्सपियर के जन्म स्थान स्ट्रेटफोर्ड-अपॉन-एवोन के दर्शनीय स्थलों का संक्षिप्त वर्णन किया गया था। उसी कस्बे में शेक्सपियर स्मारक नाट्यशाला भी है जहाँ संसार के कोने-कोने से प्रशंसक पहुँचकर उस महान नाटककार के नाटक देखने आते हैं। हमें बताया गया कि उस नाट्यशाला में दर्शकों के लिए १३१० सीटें हैं जो प्राय: महीनों पहले रिजर्व हो जाती है और हर शाम की (एक शो ही होता है) आमदनी ८०० पौंड अथवा १२ हजार रुपए के लगभग होती है। वर्ष में आठ महीने नाटकों का प्रदर्शन चलता है।

फेलकन होटल

हम स्ट्रेटफोर्ड के फेल्कन होटल में ठहरे थे। वहीं हमने दोपहर का भोजन भी किया था। होटल के सामनेवाली सड़क पर कोई १००-१२० गज दूर यह शेक्सपियर-नाट्यशाला है। यह होटल शेक्सपियर के जमाने से ही चला आ रहा है। होटल के दीवानखाने में दो-तीन प्रशंसा पत्र भी टंगे हैं। इनमें एक शेक्सपियर की बड़ी लड़की श्रीमती सुसेन हॉल का भी

है। श्रीमती हॉल ने जब ब्रिटेन की महारानी १९४३ में वहाँ गयी थीं तो उनके स्वागत में एक दावत उस होटल में दी थी। उसका दिलचस्प वर्णन भी वहाँ लिखा टंगा है। उस दावत में कौन-सी शराब कितनी खर्च हुई और किसने किस चीज की प्रशंसा की इसका वर्णन भी उसमें मिल जाता है।

जैसा कि हमने पहले लिखा ब्रिटेन में सूर्यास्त उन दिनों नौ बजे के बाद होता था इसलिए शाम का खाना भी देर से खाया जाता था किन्तु नाटक के शुरू होने का समय ७॥ बजे होने से हम लोगों ने जो भी थोड़ा बहुत नाश्ता बना था जल्दी ही ले लिया और नाट्यशाला की ओर चल दिये। हमारी तरह नाटक देखनेवालों की भीड़ सड़क पर जा रही थी जिसमें संसार के देश-देश के लोग थे।

नाट्यशाला

वर्तमान नाट्यशाला १९३२ में बनकर तैयार हुई थी। कभी-कभी बुराई से भी भलाई हो जाती है। अग्निकांड से पुरानी नाट्यशाला भस्म हो गयी थी। इसलिए इस नयी नाट्यशाला का निर्माण करना पड़ा। नाट्यशाला के भवन की स्थापत्य कला बिलकुल सादी है। किन्तु उस सादगी में ही एक कला है जो दर्शक को प्रभावित किये बिना नहीं रहती।

एवोन नदी के तट पर यह नाट्यशाला खड़ी है। निकट ही बत्तखों के झुंड पानी पर तैर रहे थे। गर्मी का मौसम होने के कारण सामने के तट पर कुछ युवक-युवतियाँ लेटे भी पड़े थे। उनके पास ही, शायद सैलानियों के लिए एक किश्ती भी



बधी थी। एक ओर पत्थर का पुराना पुल दिखायी दे रहा था जो ह्यू क्लोपटन ने बनवाया था। श्री क्लापटन स्ट्रैटफोर्ड के ही रहनेवाले थे किन्तु बाद को अपने अध्यवसाय से वह लन्दन के लार्ड मेयर (महापौर) भी बन गये थे। एवान के एक तट पर एक ओर तो जहाँ तक आँख जाती है हरियाली ही हरियाली नजर आती है और दूसरी ओर बनक्रफ्ट की विश्राम वाटिका है। समस्त दृश्य ऐसा है जिसे कभी भूला नहीं जा सकता।

नाट्यशाला में प्रवेश करते हुए हमें अनुभव हुआ कि जहाँ तक आधुनिक साधनों के उपयोग का सम्बन्ध है लन्दन के किसी भी अच्छे थियेटर से यह कम नहीं। किन्तु अन्दर हाल में वही ऐलिजबेथिन वातावरण दिखायी दिया। मंच घूमनेवाला है और एक साथ दर्शक को शेक्सपियर काल में ले जाता है।

उस शाम नाटक था—'टेमिंग ऑफ दि श्रू'। शेक्सपियर का यह सुखान्त नाटक उन छोटे नाटकों में गिना जाता है जो मंच पर अति लोकप्रिय हुए हैं। एक सामन्त की दो लड़कियाँ हैं जिनमें एक बड़ी तेज-तर्रार है जिसके उग्र और क्रोधी स्वभाव से उसके पिता भी घबराते हैं। एक नवयुवक उससे विवाह करता है और अपने निरंकुश व्यवहार से उस भीगी बिल्ली बना देता है। सारे नाटक में दर्शक कहकहे लगाते रहते हैं। इस नाटक को देखते हुए हमें 'नाम' मारी की वह कहानी याद आ गयी जिसमें इसी प्रकार की दो बहिनों क

पति अपनी पत्नियों के कर्कश व्यवहार के कारण त्रस्त थे और उनमें से एक ने अपने घर की बिल्ली मार कर अपनी नवपरिणीता को डरा दिया जिसने उसे भीगी बिल्ली बना दिया था। उस कहानी का नाम है—'गुर्बा कुश्तन रोज अव्वल' यानी बिल्ली पहले ही दिन मारी जाती है।

नाटक १०॥ बजे रात को समाप्त हुआ और हम उसी समय बर्मिंघम के लिए रवाना हो गये। रास्ते में यह विचार तीव्रता के साथ मस्तिष्क पर छा रहा था कि यदि शेक्सपियर आज जीवित होते तो उन्हें यह परम सन्तोष होता कि जो काम उनके जीवनकाल में न हो सका—संसार के लोगों को नाटक दिखाने का—वह अब पूरा हो रहा है। हमारे देश में कालिदास से लगाकर प्रसाद तक किसी के स्मारक स्वरूप इस प्रकार की व्यवस्था नहीं हो सकी है। लमही में प्रेमचन्द स्मारक का काम अर्थाभाव के कारण तेजी से आगे नहीं बढ़ रहा है। क्या हमारे देश में अर्थ की इतनी कमी है? या फिर हम लोगों में अपने साहित्यकारों और कलाकारों के प्रति सम्मान नहीं है?

ब्रिटेन में किस बड़े अभिनेता ने शेक्सपियर के किस पात्र का अभिनय किया यह आम चर्चा का विषय बना रहता है। डेविड गेरिक उन कुछ अभिनेताओं में गिने जाते हैं जिन्होंने शेक्सपियर के नाटकों के अनेक महत्त्वपूर्ण चरित्रों का अभिनय किया है। उनके नाम से स्ट्रेटफोर्ड कस्बे के टाउनहाल में एक स्मारक पत्थर लगा है जो १७६९ में लगाया गया था।

गेरिक ने शेक्सपियर की एक मूर्ति भेंट की थी जो हाल की उत्तरी ओर की दीवार के पास लगी हुई है।

रास्ते की सराय

ये पंक्तियाँ लिखते हुए रास्ते की एक छोटी-सी सराय का ध्यान हमें हो आया है। जगह का नाम है ब्र-ऑन-टेम्स। वे एक छोटा सा गाँव है। पर ब्रिटन के गाँव भी तो भारत के किसी शहर से कम नहीं। साफ-सुथरा स्थान। हमें वहाँ जलपान करने का अवसर मिला। पास ही जो सज्जन बैठे थे वह शायद कोई अवकाश प्राप्त सरकारी अफसर थे। उन्होंने बताया कि वह गाँव ऐतिहासिक है।

सन् १४४८ में चर्च के एक पादरी के कारण वह गाँव ब्रिटेन भर में प्रसिद्ध है। 'ब्रे का पादरी' नामक कविता बहुत दिनों से गायी जाती है। उस पादरी के सम्बन्ध में दन्त कथा यह है कि वह ब्रे के चर्च का पादरी उन दिनों रहा जब ब्रिटेन के राजा कभी पोपवादी बन जाते थे कभी प्रोटेस्टेंट। राजा हेनरी अष्टम एडवर्ड षष्ट रानी मेरी और रानी एलिजबेथ के शासनकाल में वह निरन्तर पादरी बना रहा। पहले वह पोपवादी था फिर प्रोटेस्टेंट हो गया। हवा के साथ वह पुन पोपवादी बना और अन्त में प्राटेस्टेन्ट। उसने धर्म के नाम पर विण्डसर में बलिदान होते देखे किन्तु उसके मीठ स्वभाव के लिए वह धार्मिक आग बड़ी गर्म थी। उसे लोगों ने एक बार

पति अपनी पत्नियों के कर्कश व्यवहार के कारण त्रस्त थे और उनमें से एक ने अपने घर की बिल्ली मार कर अपनी नवपरि णीता को डरा दिया जिसने उसे भीगी बिल्ली बना दिया था। उस कहानी का नाम है—'गुर्बा कुश्तन रोज़ अव्वल' यानी बिल्ली पहले ही दिन मारी जाती है।

नाटक १०॥ बजे रात को समाप्त हुआ और हम उसी समय बर्मिंघम के लिए रवाना हो गये। रास्ते में यह विचार तीव्रता के साथ मस्तिष्क पर छा रहा था कि यदि शेक्सपियर आज जीवित होते तो उन्हें यह परम सन्तोष होता कि जो काम उनके जीवनकाल में न हो सका—संसार के लोगों का नाटक दिखाने का—वह अब पूरा हो रहा है। हमारे देश में कालिदास से लगाकर प्रसाद तक किसी के स्मारक स्वरूप इस प्रकार की व्यवस्था नहीं हो सकी है। लमही में प्रेमचन्द स्मारक का काम अर्थाभाव के कारण तेज़ी से आगे नहीं बढ़ रहा है। क्या हमारे देश में अर्थ की इतनी कमी है ? या फिर हम लोगों में अपने साहित्यकारों और कलाकारों के प्रति सम्मान नहीं है ?

ब्रिटेन में किस बड़े अभिनेता ने शेक्सपियर के किस पात्र का अभिनय किया यह आम चर्चा का विषय बना रहता है। डेविड गेरिक उन कुछ अभिनेताओं में गिने जाते हैं जिन्होंने शेक्सपियर के नाटकों के अनेक महत्वपूर्ण चरित्रों का अभि नय किया है। उनके नाम से स्ट्रेटफोर्ड कस्बे के टाउनहाल में एक स्मारक पत्थर लगा है जो १७६९ में लगाया गया था।

गेरिक ने शेक्सपियर की एक मूर्ति भेंट की थी जो हाल की उत्तरी ओर की दीवार के पास लगी हुई है।

रास्ते की सराय

ये पंक्तियाँ लिखते हुए रास्ते की एक छोटी-सी सराय का ध्यान हमें हो आया है। जगह का नाम है ब्रे-ऑन-टेम्स। ये एक छोटा सा गाँव है। पर ब्रिटेन के गाँव भी तो भारत के किसी शहर से कम नहीं। साफ-सुथरा स्थान। हमें वहाँ जलपान करने का अवसर मिला। पास ही जो सज्जन बैठे थे वह शायद कोई अवकाश प्राप्त सरकारी अफसर थे। उन्होंने बताया कि यह गाँव ऐतिहासिक है।

सन् १५४८ में चर्च के एक पादरी के कारण यह गाँव ब्रिटेन भर में प्रसिद्ध है। 'ब्रे का पादरी' नामक कविता बहुत दिनों से गायी जाती है। उस पादरी के सम्बन्ध में जो कथा है वह है कि वह ब्रे के चर्च का पादरी उन दिनों रहा जब ब्रिटेन के राजा कभी पोपवादी बन जाते थे कभी प्रोटेस्टेंट। राजा हेनरी अष्टम एडवर्ड षष्ठ रानी मेरी और रानी एलिज़ाबेथ के शासनकाल में वह निरन्तर पादरी बना रहा। पहले वह पोपवादी था फिर प्रोटेस्टेंट हो गया। इसके बाद वह फिर पोपवादी बना और अन्त में प्रोटेस्टेंट। उन दिनों के [illegible] स्मिथफील्ड में बलिदान होते रहे किन्तु उसके [illegible] के लिए यह धार्मिक भाग बड़ा गम था। [illegible]

था पकड़ा और कहा कि तुम बराबर रंग बदलते रहे हो। तो उसने धीरे से उत्तर दिया कि मैं अपने सिद्धान्त पर आरूढ़ रहा। मैं ग्रे का पादरी बना रहकर मरना चाहता हूँ।

१५वीं शती की उस घटना को लोग आज भी उस सराय में बैठकर चाव से कहते और सुनते हैं।



स्काटलैण्ड की शोभा

अगर यह कह दिया जाय कि ब्रिटेन के चार मुख्य भागों—इंगलैण्ड स्काटलैण्ड वेल्स और आयरलैण्ड में स्काटलैण्ड की शोभा-सुषमा सबसे अधिक है तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। स्काटलैण्ड ब्रिटिश द्वीप समूह के उत्तर में है और इसका क्षेत्रफल ३० हजार वर्गमील से कुछ ही कम होगा। यह इंग्लैण्ड से क्षेत्रफल में कुछ कम है और आबादी भी यहाँ की कुल ५० लाख ही है किन्तु यहाँ कुछ दिन रहने पर ही यह अनुभव हो जाता है कि लोगों में राष्ट्रीय और प्रान्तीय भावना अब भी बहुत काफी बनी हुई है। यहाँ तक कि स्काटलैण्डवासी अपने नोट भी अलग छापते हैं, वैसे इंग्लैण्ड से उनका राजनीतिक एकीकरण १७०७ की सन्धि के अनुसार ही हो चुका है।

पहले ये दोनों ही देश राजनीतिक रूप से अलग-अलग थे और स्काटलैण्ड अपनी स्वतन्त्रता बनाये रखने के लिए सदा विद्रोही बना रहा। आज भी स्काटलैण्ड के प्रशासन के लिए ब्रिटिश संसद में एक अलग मंत्री रहता है और अन्य स्थानीय व्यवस्थायें भी अलग-अलग हैं। उनका अपना कानून

और शिक्षण प्रणालियाँ हैं। भाषा भी अलग है और रहन-सहन का ढंग भी।

संसद में स्काटलैण्ड वासियों के लिए कानून की प्रायः भी व्यवस्था वहीं के सदस्य करते हैं। संसद में प्रायः स्काटलैण्ड के लिए अलग से कानून पास किये जाते हैं। राज्यसभा में भी स्काटलैण्ड का प्रतिनिधित्व है और लोकसभा में उनके ७१ सदस्य अलग अलग चुनाव क्षेत्रों से चुनकर जाते हैं।

झीलें, नदियाँ और पर्वत

स्काटलैण्ड में पर्वतमाला, उसकी गोद में झीलें और तेज बहनेवाली नदियाँ हैं। हमें एडिनबरा से लेक (झील) लाय के किनारे किनारे कोई २०० मील मोटर द्वारा जाने का अवसर मिला। संयोग से दिन साफ था कभी-कभी ही बादल छा जाते थे। एक ओर पहाड़ियाँ थीं जो हरियाली के कालीन से ढकी हुई थीं और दूसरी ओर झील थी जिसके किनारे यहाँ-वहाँ सैर करनेवाले अपने-अपने तम्बू डेरे ताने आनन्द मना रहे थे। इस दृश्य को देखकर हमें अपने देश के नैनी ताल शिमला आदि पहाड़ी स्थानों की याद हो आयी। रास्ते में ही एक ऐसे होटल में खाना खाया जहाँ कुछ समय पहले ब्रिटेन की वर्तमान महारानी अतिथि हुई थीं। शाम को घूम घामकर जब लौटे तो थकान का नाम नहीं था। ऐसा लगता था कि यह दिन प्रकृति के साथ रहने के कारण बिल्कुल भारी नहीं पड़ा आनन्द ही आनन्द रहा।



स्कॉटलैण्ड की शोभा

इस झील पर एक बांध भी बनाया गया है जो ११६० फीट लम्बा और १६० फीट ऊँचा है। एक बिजलीघर भी तयार हुआ है जहां एक लाख ३० हजार किलोवाट बिजली तयार की जायगी। इस बिजली घर के देखने का अवसर भी हमें मिला।

इतिहास

कहते हैं कि सन् ५०० में आयरलैण्ड से आकर लोग यहाँ बस थे। स्काटलैण्ड के राजा जेम्स षष्ठ के १६०३ में इग्लैंड के भी राजा बन जाने के बाद बरसों गृहयुद्ध चलता रहा और १७०७ में आकर वह समाप्त हुआ।

यद्यपि ग्रेट ब्रिटेन को बने १७०७ से २५३ वर्ष हो गये फिर भी स्काटलैण्ड-वासियों से बातचीत करने पर हमें यह लगा कि अब तक उनमें से कुछ की निश्चित रूप से यह धारणा है कि इग्लैंडवासी उन पर शासन करते हैं हालांकि स्काटलैण्ड के राजा ही इगलण्ड की राजगद्दी पर पहले शासन करते रहे इसलिए उनकी राय में उनका ही प्राधान्य होना चाहिए। यह कैसी विडम्बना है कि हमारे देश में भी कुछ दक्षिणवासियों की ब्रिटेन के उत्तरवासी स्काटिश लोगों की तरह इस प्रकार की धारणा है कि उत्तर भारतवासों का प्राधान्य है।

एडिनबरा में एक सज्जन ने हमसे कहा—"देखिये इग्लैंड में कोई भी बकार आपको नहीं मिल सकता। जहां तक

उद्योगों का समन्वय है, वहाँ पर ये भी अधिक फले-फूले हैं किन्तु उत्तर में यहाँ जैसी सम्पन्नता नहीं हो पायी।"

हमारा ख्याल है कि इस स्थिति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ, वातावरण राजनीतिक पृष्ठभूमि ही बहुत कुछ जिम्मेदार है इंगलैंडवासी उतने नहीं। पर कुछ स्काटलैण्ड वाले इस विचार से सहमत नहीं।

एडिनबरा और ग्लासगो में उद्योग तेजी के साथ बढ़ रहे हैं। दो वर्ष पहले जब हमें ब्रिटेन जाने का मौका मिला था तब में और अब में स्पष्ट अन्तर दिखायी देता है। औसत ब्रिटेनवासी पहले की अपेक्षा काफी अधिक सम्पन्न है और यह सम्पन्नता इस समय युवावस्था को पहुँच रही है।

ग्लासगो

ग्लासगो शहर जाने का अवसर भी मिला। यहाँ पर ब्रिटेन का ही नहीं संसार का समुद्री जहाज बनाने का उद्योग बड़ा विकसित है। ग्लासगो एडिनबरा से बड़ा नगर है। यहाँ के विश्वविद्यालय में भारतीय विद्यार्थी भी शिक्षा प्राप्त करने आते हैं। यहाँ के नगर निगम की महापौर (लार्ड प्रोवोस्ट) एक महिला हैं। उन्होंने सौजन्यतापूर्वक हमारा स्वागत किया। यह महिला पहले एक अध्यापिका थीं। अपनी योग्यता के कारण आज उस पद पर आसीन हैं। उन्होंने बातचीत में बतलाया कि किस प्रकार नगर निगम लोगों के रहने के लिए आरामदेह मकानों का निर्माण करा रहा है। आधुनिक साधनों से पूर्ण इन मकानों के बन जाने पर उनका स्टैण्डर्ड किराया

तय कर दिया जाता है और ग्लासगोवासी जो स्वयं अपना मकान नहीं बनवा सकते, इनका लाभ उठाते हैं। हमारे यह पूछने पर कि इनके बनाने के लिए धन कहाँ से प्राप्त होता है उक्त महिला ने बताया कि कुछ धन तो सरकार से अनुदान के रूप में प्राप्त होता है, कुछ निगम स्वयं अपने पास से निकालता है और शेष किरायेदारों से जो किराया वसूल होता है वह काम में ले लिया जाता है। इस प्रकार मकानों की समस्या का समाधान करने में निगम अत्यन्त सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है।

ग्लासगो की क्लाइड नदी में हम एक स्टीमर द्वारा कोई ५० ६० मील अन्दर तक गये और वहाँ हमने समुद्री यात्रा का आनन्द प्राप्त किया।

पुराने क़िले

स्काटलैंड की राजधानी एडिनबरा सदियों तक लड़ाई-झगड़ों का केन्द्र बनी रही इसलिए वहाँ पर प्राचीन क़िला और दुर्गों का होना स्वाभाविक है। या किले ही नहीं एडिनबरा नगर भी बहुत सुन्दर है। सबसे पहले हम होलीरुड राजभवन देखने गये। इस किले को देखते ही पता चल जाता है कि यह ऐतिहासिक राजभवन होने योग्य है।

होलीरुड राजभवन

होलीरुड राजभवन में स्काटलैंड के राजा रानी ही नहीं ब्रिटेन के शाह भी रहते रहे हैं। आज भी जब ब्रिटेन के राजा रानी स्काटलैंड की यात्रा पर आते हैं तो परम्परागत रूप में उन्हें नगर की कुंजी भेंट की जाती है। उस भवन में हमने वे विशेष कक्ष भी देखे जहाँ ब्रिटेन की वर्तमान महारानी ठहरती हैं।

इस राजभवन का इतिहास बड़ा मनोरंजक है। कहते हैं कि १४ सितम्बर ११२८ को स्काट राजा डेविड प्रथम शिकार

के लिये गए। इस गढ़क्षी राजभवन के चारों ओर पहाड़ी क्षेत्र और जंगल आज भी हैं। संयोग से राजा डेविड अपने कर्मचारियों से बिछुड़ गये। एक बारहसिंगे ने उन्हें घोड़े से नीचे पटक दिया, अपने आपको बारहसिंगे के सींग से बचाने के लिए उन्होंने उसे पकड़ लिया किन्तु आश्चर्य कि उनके हाथ में सींग न होकर एक सलीब (क्रास) था। जब यह घटना पादरी ने सुनी तो कहा कि वह दिन पूजा आराधना के लिए था शिकार के लिए नहीं इसलिए वहाँ पर पवित्र सलीब के नाम पर भवन और गिरजा बनाया जाना चाहिए।

एक दूसरी दन्तकथा के अनुसार गिरजे की दीवार बनाते हुए एक कारीगर ऊपर से नीचे गिर गया और मर गया। उसे देवता के सामने वेदी पर रख दिया गया। अगले दिन सुबह राजा गिरजे में पहुँचे और जब वह प्रार्थना में झुके तो उन्होंने देखा कि कारीगर के सिर पर सलीब बना है और वह आँखें खोल रहा है। उसके बाद वहाँ बड़ा गिरजाघर बनवाया गया।

इतिहास बताता है कि १६ नवम्बर, १०९३ को एक धर्मपरायण महिला मारग्रेट (डेविड की माता) जब एडिनबरा किले में मर गयीं तो उनका पार्थिव शरीर एक स्वर्णपात्र में रखकर होलीरूड गिरजे में रखा गया और यह शताब्दी तक स्काटलैंड का राष्ट्रीय यादगार बना रहा।

राजाओं का निवास

स्काटलैंड के बहुत से राजा-रानियों का निवास इस किले

में रहा। जेम्स द्वितीय का इसी भवन में जन्म हुआ, विवाह भी हुआ और उनकी मृत्यु के बाद उन्हें दफनाया भी यहीं गया था। जेम्स तृतीय बहुत समय तक यहाँ रहे। उनकी महारानी का अभिषेक भी यहीं हुआ था। जेम्स चतुर्थ ने गिरजा के पास एक और नया भवन बनवाया। इसका निर्माण सन् १५०० में शुरू हुआ और तीन साल चला। इंगलैंड के हेनरी सप्तम की कन्या मारग्रेट ट्यूडर का विवाह उनके साथ इसी भवन में हुआ था। जेम्स पंचम का १४ दिसम्बर १५४२ को देहान्त भी यहीं हुआ। किन्तु सबसे प्रमुख व्यक्ति बहुचर्चित मेरी स्टुअर्ट जो बाद को मेरी क्वीन आव स्काट्स के नाम से प्रसिद्ध हुई इस राजभवन की मालिक बनीं। हेनरी अष्टम ने उसका विवाह अपने पुत्र एडवर्ड षष्ट से किया। उस समय मेरी कुल सात महीने की थीं।

मेरी का बाद को लार्ड डार्नले से विवाह हुआ। दोनों में दाम्पत्य बहुत अच्छी नहीं पटी। मेरी का एक इटालियन सचिव डविड रिजियो था। ६ मार्च १५६६ का उसी राजभवन के एक कमरे में जब भोजन के लिए मेरी तयार थीं, डविड रिजियो की हत्या कर दी गयी। जहाँ हत्या की गयी थी वहाँ आज भी एक पीतल की तख्ती जमीन पर लगी हुई है। कहा जाता है कि उस हत्या में डार्नले शरीक था। उस समय मेरी गर्भिणी थीं। इसी राजकुमार जेम्स के जमाने में स्काटलैंड और इंग्लैंड की सन्धि हुई। डार्नले भी एक साल से कम अर्से में मार डाला गया।



स्काटलैण्ड का ऐतिहासिक राजभवन

क्रामवेल के सत्ताकाल में एक बार सेना ने होलीरुड के ऐतिहासिक गिरजे को नष्ट भ्रष्ट किया। यह घटना १६५० की है। कहा यह जाता है कि आग अपने आप लग गयी थी, उसी से गिरजे का अधिकांश भाग नष्ट हो गया। किन्तु ६ वर्ष बाद क्रामवेल के आदेश से फिर उस भवन का पुनरुद्धार हुआ। १८२२ में जार्ज चतुर्थ के शासनकाल में इस राज-भवन के दिन फिर सुधरे। १८५० में महारानी विक्टोरिया उस भवन में आकर रहीं और पिछले एक सौ साल से ब्रिटन के राजा रानी इसी भवन में आकर ठहरते हैं।

इस प्रकार इस भवन ने न जाने कितने उतार-चढ़ाव, युद्ध और दुरभिसन्धियाँ देखी हैं।

एडिनबरा दुर्ग

एडिनबरा दुर्ग देखकर हमें फिर एक बार अपने देश के दुर्गों की याद आ गयी। आज भी वहाँ स्थान-स्थान पर तोपें लगी हैं। दुर्ग के एक स्थान आर्गिल टावर के पास जो तोप रखी है वह रोज एक बजे दागी जाती है। पास ही पुरानी जमाने की एक घड़ी भी है जो सही ठीक चलती है और उसी के समय के अनुसार तोप दागी जाती है। एडिनबरावासी जहाँ उससे अपनी घड़ियाँ ठीक करते हैं वहाँ उन्हें अपने दोपहर के भोजन की याद भी हो आती है।

इस दुर्ग का इतिहास प्राचीन काल के गर्भों में छिपा है। एक जगह उल्लेख मिलता है कि ईसा से एक हजार साल

पहले वरतामिया का एक राजा एग्रेरॅक यहाँ रहता था जिसकी २१ पत्नियों ने बीस बेटे और तीस बेटियों को जन्म दिया था। किन्तु इतिहास में ग्यारवीं शती से पहले इस दुर्ग का कोई पता नहीं चलता। सम्भव है प्राचीनकाल में उन ऊँची-नीची पहाड़ियों के ऊपर कोई छोटा-मोटा दुर्ग रहा हो। यह भी हो सकता है कि उससे पहले सातवीं शती में नार्थम्ब्रिया के राजा एडविन ने जिसके नाम पर एडिनबरा नगर का नाम पड़ा बताया जाता है किलेनुमा भवन बनवाया हो।

शेक्सपियर के सुप्रसिद्ध नाटक मेकबथ में जिस डंकन का उल्लेख है उसका लड़का मेलकम कैनमोर १०५७ से १०९३ तक अवश्य उस दुर्ग में रहा था। कैनमोर ने मेलकम तृतीय के नाम से स्काटलैंड का शासन संभाला था। इसी मेलकम ने एडवर्ड की पुत्री मारग्रट से विवाह किया था जो सन्त मारग्रेट के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुई। उन्हीं मारग्रट ने पास का छोटा गिरजाघर निर्माण कराया था। इसी छोटे-से कमरे में उन दिनों राजे रजवाड़े मिला करते थे। होलीरुड राजभवन की तरह इस दुर्ग ने भी अनेक लड़ाइयां देखी।

११७४ में स्काट और अंग्रेजों की लड़ाई में यह दुर्ग प्रथम बार अंग्रेजों के हाथ गया। उसके बाद राजगद्दी की लड़ाई के लिए १२वीं १०वीं और १४वीं शताब्दी तक कई घमासान युद्ध इस दुर्ग से लड़े गये। स्टुअर्ट राज-परिवार के डेविड तृतीय की मृत्यु के बाद कई स्टुअर्ट राजा-रानी इस दुर्ग में रहे, कुछ शासनकर्ताओं के रूप में, कुछ भगोड़ों के रूप में और कुछ कैदियों की तरह।

पन्द्रहवीं शताब्दी में इस दुर्ग का पुनर्निर्माण हुआ और मेरी क्वीन आफ़ स्काट्स तथा उसके पति लार्ड डार्नले भी कुछ समय इस दुर्ग में रहे। १९ जून, १५६६ को मेरी के पुत्र जेम्स ने जन्म लिया जिसके शासनकाल में आगे चल कर गृह-युद्ध का अन्त हुआ।

१६३३ में चार्ल्स प्रथम इस दुर्ग में हालीरुड राजभवन में हुए अपने अभिषेक से एक दिन पहले आकर ठहरे थे और अन्तिम बार वह यहाँ १६४१ में आये थे। उसके बाद उनका पुत्र चार्ल्स द्वितीय थोड़े-से समय के लिए इस दुर्ग में आया था। तदनन्तर दो-सौ वर्ष तक कोई भी राजा रानी वहाँ न गया। बाद को जार्ज चतुर्थ ही पहला राजा था, जो वहाँ पहुँचा था। प्रथम महायुद्ध के बाद इस दुर्ग को स्काटलैण्ड का राष्ट्रीय युद्ध-स्मारक बना दिया गया।

इन दिनों वहाँ एक सुन्दर अजायबघर है जिसमें प्राचीन-काल में व्यवहृत होनेवाली अनगिनती बन्दूकें और राइफलें, वल्लमें और भेले, ढाल-तलवारें और जिरह-बख्तर रखे हुए हैं। एक कमरे में स्काटलैंड के राजाओं के मुकुट, मणि-मालायें, पेटी और तलवार भी सुरक्षित हैं। राष्ट्रीय युद्ध-स्मारकवाले कक्ष में दो महायुद्धों में वीरगति प्राप्त स्काट-लैंडवासियों के नाम अंकित हैं जिन्हें देखकर स्काटलैंडवासी बड़ी श्रद्धा से सिर झुकाते हैं।

राष्ट्रमंडल

जिसे पहले ब्रिटिश राष्ट्रमंडल (कामनवेल्थ) कहा जाता था वही बाद को राष्ट्रमंडल कहा जाने लगा। हुआ यह कि पहले ब्रिटेन कनाडा आस्ट्रेलिया न्यूजीलैण्ड और दक्षिण अफ्रीका ऐसे देश ब्रिटिश राष्ट्रमंडल के सदस्य थे जो ब्रिटेन के राजा रानियों को अपना राज प्रमुख मानते थे किन्तु १९४७ में अविभाजित भारत के दो देश बने—भारत और पाकिस्तान जो बाद में गणराज्य बन गये और जिनमें राष्ट्राध्यक्ष पद पर ब्रिटेन की महारानी नहीं रहीं। तभी 'ब्रिटिश' शब्द अलग हो गया और राष्ट्रमंडल नाम रह गया। इस समय राष्ट्रमंडल के सदस्य उक्त सात देशों के अलावा श्रीलंका घाना मलय संघ तथा नाइजीरिया हैं।

संसार की चौथाई आबादी से अधिक वाली चौथाई भूमि पर ये राष्ट्रमंडलीय देश फैले हुए हैं। किन्तु दिलचस्प बात यह है कि अकेले भारत की आबादी संसार की पंचमांश से कुछ ही कम है और बाकी में दस देश हैं। राष्ट्रमंडल का गठन किसी भी व्यक्ति को बड़ा अजीब लग सकता है। अलग अलग रूप रंग, अलग अलग विचारधाराएं और कुछ में मन मुटाव की भी कमी नहीं, लेकिन फिर भी सारे काम, राज



लिवरपूल में राष्ट्रमण्डलीय देशों के झण्डे

शाही-लोकशाही का एक ऐसा मिश्रण है जो समान हानि लाभ की बातों पर मिल बैठकर बातचीत कर सकते हैं।

मतभेद

दक्षिण अफ्रीका की सरकार रंग भेद की नीति मनमाने ढंग से अपना रही है। भारत पाकिस्तान मलय संघ और नाइजीरिया उस नीति के अत्यन्त कटु आलोचक हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ में जब-जब इस प्रश्न पर चर्चा उठती है तब-तब ये देश और इनके साथ अब और भी अधिकांश देश दक्षिण अफ्रीकी नीति की निन्दा करते हैं और जब इस साल (१९६१ में) राष्ट्रमंडलीय प्रधानमंत्री सम्मेलन में इस प्रश्न पर चर्चा हुई तब भी इस पर क्षोभ प्रकट किया गया। एक बार तो गर्मी काफी बढ़ गयी और दक्षिण अफ्रीका को यह फैसला करना पड़ा कि वह गणतन्त्र बनकर राष्ट्रमंडल का सदस्य नहीं रहेगा।

भारत और पाकिस्तान के बीच अनेक विवाद चल रहे हैं। इनमें कश्मीर का सवाल तो संयुक्त राष्ट्रसंघ में भी आ चुका है।

नाटो सण्टो आदि सैनिक गठ-बन्धनों के प्रश्न पर भारत की अपनी स्पष्ट नीति है कि इस प्रकार के सगठन नहीं होने चाहिए। किन्तु बाकी अधिकांश दूसरे देशों की नीति भिन्न है। फिर भी दक्षिण अफ्रीका भारत और पाकिस्तान तथा अन्य देश एक साथ बैठकर विचार विनिमय करते हैं, यह आश्चर्यजनक नहीं तो क्या है?

राष्ट्रमंडल संयोजन स्वभावतः ब्रिटन की ओर से

है। इसलिये अब तक सभी प्रधानमंत्रियों के सम्मेलन लन्दन में हुए। जिस समय हम ब्रिटेन की यात्रा पर गये ब्रिटेन में राष्ट्रमंडलीय प्रदर्शनी बड़े-बड़े नगरों में घूम रही थी। इस प्रदर्शनी में सभी राष्ट्रमंडलीय देशों के कक्ष हैं जहां उनके विशिष्ट परिधान नेता मंत्रियों, औद्योगिक प्रगति आदि का सुन्दर प्रदर्शन हो रहा है।

मार्लिब के सेंट एण्ड्रयू हाल में प्रदर्शनी का उद्‌घाटन भारतीय उच्चायुक्त श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने किया था। उस समय राष्ट्रमंडलीय सचिव श्री स्टुअर्ट भी उपस्थित थे। हमें इस प्रदर्शनी के दर्शन का अवसर न्यू कासल ऑन-टाइन में हुआ।

न्यू कासल

टाइन नदी के किनारे ग्रेण्ड होटल में रात को दस बजे के लगभग हम पहुँचे। उस रात आकाश मेघाछन्न न था और चन्द्रमा की शुभ्र चाँदनी टाइन की उत्ताल तरंगों पर झूम रही थी। अपने कमरे की खिड़की हमने खोल दी और वहां प्राकृतिक सुन्दर दृश्य देखते-देखते आधी रात बीत गयी। अगर बादल घिरकर छींटे न डाल देते तो पता नहीं कब तक हम खिड़की पर खड़े रहते।

सुबह गर्मी गर्मी थी। उसी समय राष्ट्रमंडलीय प्रदर्शनी में भारतीय चाय की पत्तियां भेंट की जानेवाली थीं और प्रदर्शनी के संयोजक यह चाहते थे कि कोई भारतीय ही यह

भेंट दे। इसलिए हम जल्दी ही प्रदर्शनी पहुँच गये। एक अंग्रेज दादी और उसकी पौत्री को जब हमने चाय के पैकिट भेंट किये तो उस झुर्रीदार चेहरे पर अपने आप मुस्कान आ गयी और दादी और पौत्री ने यह बताया कि भारतीय चाय ही उन्हें सबसे अच्छी लगती है।

प्रदर्शनी के मुख्य द्वार पर राष्ट्रमण्डलीय देशों के बड़े-बड़े झण्डे फहरा रहे थे। अन्दर विभिन्न कक्षों में ब्रिटेन का कक्ष सबसे सुन्दर था। सामने ब्रिटेन की महारानी का आदम-कद सुन्दर चित्र था। उसके चारों ओर और सब देशों के छोटे-छोटे झण्डे लहरा रहे थे। यों भारत का कक्ष अच्छा ही था पर भारतीय होने के नाते मुझे यह लगा कि उससे भारत के बारे में एक सच्ची तस्वीर सामने नहीं आती। अतः यदि वह और अच्छा होता तो ज्यादा ठीक रहता।

प्रदर्शनी का विचार बहुत सुन्दर है। व्यवस्था यह होनी चाहिए कि यह सभी राष्ट्रमण्डलीय देशों में जाय। स्वभावतः जिस देश में वह जायगी वहाँ की चीजों की उसमें बहुतायत और शेष सबकी वस्तुयें कम होंगी। फिर भी इससे विभिन्न देशों में निकटता आयगी क्योंकि कौन जानता है कि आगे चलकर राष्ट्रमण्डल एक अत्यन्त सक्षम और तटस्थ शक्ति के रूप में सामने न आयगा। निश्चय ही इसमें ब्रिटेन भारत तथा अन्य बड़े देशों को पहल करनी होगी।

राष्ट्रमण्डल का विचार अभी तक भी व्यापक रूप से

विभिन्न साथी देशों में उस प्रकार नहीं फल पाया जैसा कि अपेक्षित है। यदि इन देशों में भाई-चारा नहीं बढ़ता तो फिर राष्ट्रमंडल का कोई खास माने नहीं रह जायगा। यह ठीक है कि आपसी मतभेद बने रहेंगे, किन्तु जैसा कि पिछले दिनों संयुक्त राष्ट्रसंघ में प्रकट हुआ, अन्तर्राष्ट्रीय गुट-बन्दी का शिकार बनकर कहीं राष्ट्रमंडलीय देशों में सैद्धांतिक मतभेद पैदा न हो जाय।

समाचार पत्रों की दुनिया

ब्रिटेन की कुल आबादी का पाँचवाँ भाग लन्दन में ही समा गया है। इसलिये संसार के इस बड़े नगर में ही जो पिछले दो महायुद्धों से पहले दुनिया की राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बना रहा उस देश की राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक गतिविधियाँ केन्द्रित हैं। एक पत्रकार होने के नाते मेरे लिये अखबारों में अधिक दिलचस्पी होना स्वाभाविक है और ब्रिटेन के राष्ट्रीय प्रातःकालीन समाचार पत्र 'गार्जियन' को छोड़कर प्रायः सभी यहाँ से प्रकाशित भी होते हैं। इसलिए लन्दन में पत्रों का अध्ययन करना उचित था।

ब्रिटन की आबादी पाँच करोड़ से कुछ अधिक है, जो भारत के उत्तरप्रदेश से भी कम है। वहाँ पर कोई सोलह सौ पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं जिनकी ग्राहक संख्या सप्ताह में २१ करोड़ बतायी जाती है। हमारे देश की कुल जनसंख्या ४० करोड़ है और यहाँ से सात हजार पत्र-पत्रिकाएँ

विभिन्न साथी देशों में उस प्रकार नहीं फल पाया जैसा कि अपेक्षित है। यदि इन देशों में भाई चारा नहीं बढ़ता तो फिर राष्ट्रमंडल का कोई खास लाभ नहीं रह जायगा। यह ठीक है कि आपसी मतभेद बन रहेंगे किंतु जैसा कि पिछले दिनों संयुक्त राष्ट्रसंघ में प्रकट हुआ, अन्तर्राष्ट्रीय गुट-बन्दी का शिकार बनकर कहीं राष्ट्रमंडलीय देशों में सद्धांतिक मतभेद पैदा न हो जाय।

समाचार पत्रों की दुनिया

ब्रिटेन की कुल आबादी का पाँचवाँ भाग लन्दन में ही समा गया है। इसलिए संसार के इस बड़े नगर में ही जो पिछले दो महायुद्धों से पहले दुनिया की राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बना रहा उस देश की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक गतिविधियाँ केन्द्रित हैं। एक पत्रकार होने के नाते मेरे लिये अखबारों में अधिक दिलचस्पी होना स्वाभाविक है और ब्रिटेन के राष्ट्रीय प्रातःकालीन समाचार पत्र 'गार्जियन' को छोड़कर प्रायः सभी वहीं से प्रकाशित भी होते हैं। इसलिए लन्दन में पत्रों का अध्ययन करना उचित था।

ब्रिटेन की आबादी पाँच करोड़ से कुछ अधिक है जो भारत के उत्तरप्रदेश से भी कम है। वहाँ पर कोई सोलह सौ पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं, जिनकी ग्राहक संख्या सप्ताह में २१ करोड़ बतायी जाती है। हमारे देश की कुल जनसंख्या ४० करोड़ है और यहाँ से सात हजार पत्र-पत्रिकाएँ

प्रकाशित होती हैं फिर भी ग्राहक संख्या कुल मिलाकर केवल डेढ़ करोड़ है।

अखबार के शौकीन

वसे ससार में ब्रिटेन ही एक ऐसा देश है जहाँ के लोगों की अखबार पढ़ने की भूख सबसे अधिक है। यूनस्को के एक सर्वेक्षण के अनुसार वहाँ एक हजार व्यक्तियों पर दैनिक पत्रों की छ सौ से भी अधिक प्रतियाँ छपती हैं। इस कोटि में दूसरा नम्बर स्वीडन का आता है जहाँ पाँच सौ प्रतियों का औसत है और तीसरे नम्बर पर है अमरीका जहाँ हिसाब साढ़े तीन सौ का लगाया गया है।

ब्रिटेन के समाचार पत्रों के मूल्य भी अन्य वस्तुओं की अपेक्षा बहुत कम हैं। 'टाइम्स' और 'फाइनेन्शल टाइम्स' का मूल्य चार पेंस है 'गार्जियन' का तीन पेंस और शेष पत्रों का ढाई पेंस ही है।

तीन श्रेणियाँ

मोटे तौर पर ब्रिटेन के समाचार पत्रों को तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। प्रथम में विशिष्ट पत्र जो गंभीर समाचार विचारों के लिए प्रसिद्ध हैं। इस कोटि में 'टाइम्स' (स्वतन्त्र नीति) 'टेलीग्राफ' (स्वतन्त्र कंजरवेटिव) 'गार्जियन (लिब रल) और 'फाइनेन्शल टाइम्स (स्वतंत्र) रखे जा सकते हैं। दूसरी श्रेणी में निम्नलिखित पाँच दैनिक आते हैं। (१) 'न्यूजक्रानिकल' (स्वतंत्र प्रगतिशील) (२) 'डेलीएक्सप्रेस' (स्वतन्त्र



समाचार पत्रों का केन्द्र फ्लीट स्ट्रीट

कन्जरवेटिव), (३) मेल' (स्वतन्त्र कन्जरवेटिव), (४) 'हैरल्ड' (लेबर पार्टी का मुखपत्र) तथा (५) 'वर्कर' (कम्यूनिस्ट पार्टी का मुख पत्र), और तीसरी श्रेणी में 'मिरर' (स्वतन्त्र मजदूर दलीय) और स्केच' (स्वतन्त्र कंजरवेटिव) रखे जा सकते हैं। जहाँ तक ग्राहक संख्या का प्रश्न है, 'टाइम्स और वर्कर' को छोड़कर प्राय सभी बारह लाख से पचास लाख तक छपते हैं।

संसार में सबसे बड़ी ग्राहक संख्यावाला पत्र है 'न्यूज आफ दि वर्ल्ड' जो ब्रिटेन का एक रविवासरीय पत्र है और जिसकी ग्राहक संख्या ७० और ८० लाख के बीच बतायी जाती है।

विभिन्न पत्र

लन्दन प्रवास के तीसरे ही दिन हमें 'टाइम्स' के कार्यालय में जाने का अवसर मिला। उस समय सम्पादक महोदय से मुलाकात न हो सकी, किंतु एक अन्य उच्चाधिकारी से बातचीत हुई। मैंने पहला प्रश्न उनसे यह किया— "जबकि आपके पत्र की आपके देश में इतनी बड़ी प्रतिष्ठा है तब क्या कारण है कि उसकी ग्राहक संख्या ढाई लाख से अधिक नहीं हो पायी, जबकि 'टेलीग्राफ' की ग्राहक संख्या ग्यारह बारह लाख है और मिरर' पचास लाख छपता है ?"

उत्तर आया— ' 'टाइम्स' जनसाधारण के लिये नहीं है वह एक विशिष्ट बौद्धिक वर्ग का पत्र है। इसलिये हमने सदा यह यत्न किया है कि उसका स्तर थोड़ा भी कम न होने

पाये। ग्राहक संख्या की ओर हमने कभी विशेष ध्यान नहीं दिया।"

बातचीत में वह यहाँ तक कह गये कि "यदि 'टाइम्स' के साहित्यिक परिशिष्ट में किसी व्यक्ति का सम्पादक के नाम पत्र भी छप जाय तो उसी आधार पर उसे कतिपय अमरीकी विश्वविद्यालय आचार्य की उपाधि दे देते हैं। संसार के अपनी कला के विशेषज्ञ 'टाइम्स' के लेखक हैं और पुस्तक समालोचना का हिसाब यह है कि सप्ताह में ४०० ६०० पुस्तकें प्राप्त होती हैं और समालोचना केवल एक दर्जन की ही प्रकाशित की जाती है। समालोचना का सिद्धान्त है — सब से अच्छी पुस्तक की सबसे अच्छी समालोचना'।

कुल मिलाकर 'टाइम्स' के आठ साप्ताहिक और मासिक परिशिष्टांक निकलते हैं जो अपने विषयों के प्रामाणिक और सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं।

'टलीग्राफ' के सम्पादक महोदय से बातचीत होने पर ज्ञात हुआ कि ब्रिटेन में तथाकथित लोकप्रिय समाचार—बलात्कार हत्या राहजनी लूटमार के सनसनीपूर्ण समाचार—पढ़ने की प्रवृत्ति एक साथ बढ़ गयी है। उन्होंने प्रश्न किया "आपके देश में साक्षरता शिक्षा तथा रहन-सहन का स्तर बढ़ने पर और औद्योगीकरण के कारण भी समाचारों की ग्राहक संख्या अवश्य बढ़ेगी। तो क्या मानव स्वभाव की कमजोरी का लाभ उठाने के लिये आपके यहाँ भी सनसनीपूर्ण समाचारों का आगमन नहीं हो गया है? अथवा क्या आप इस लहर को अपने यहाँ रोक सकेंगे।

मैंने उत्तर दिया, 'आपकी पहली बात ठीक है। ग्राहक संख्या दिन-दिन बढ़ रही है और एक-दो समाचार-पत्र सनसनी-खेज समाचार देकर अपनी ग्राहक संख्या बढ़ा भी चुके हैं। परन्तु भारत की अधिकांश पत्र-पत्रिकाओं में यह प्रवृत्ति अभी तक दिखायी नहीं देती। भारत इस सम्बन्ध में बड़ा सौभाग्य-शाली रहा है कि उसे हर जमाने में ऐसा नेतृत्व मिला जिसने समाज और राजनीति को ठीक दिशा निर्देश दिया भटकने नहीं दिया। गांधीजी के सत्य और अहिंसा का असर अभी तक मौजूद है। इसलिए आदर्शवादी पत्र और पत्रकार अभी तक हल्के-फुल्के साहित्य की ओर उन्मुख नहीं हो रहे। भविष्य में क्या होगा मेरे जैसे पत्रकार के लिये कुछ भी कल्पना करना मुनासिब नहीं है।

'गार्जियन' के दो सहायक-सपादकों से भी मैनचेस्टर में काफी देर तक बातचीत हुई। भारत की तीसरी पचवर्षीय योजना का मसविदा तभी शायद एक-दो दिन पहले ही प्रका-शित हुआ था। उस सम्बन्ध में उन दोनों बन्धुओं की दिल-चस्पी मुझे बहुत दिलचस्प लगी किन्तु यह एक अलग विषय है।

एक छोटे से कस्बे के एक साप्ताहिक पत्र का जिक्र भी करना मैं चाहूंगा। बरमिंघम से कोई १५ मील दूर वह रेडिच नामक कस्बा है जिसकी आबादी कुल तीस हजार है, और मालूम देखिये कि वहाँ का साप्ताहिक पत्र 'रेडिच इण्डीकेटर' १५ हजार बिकता है। इस साप्ताहिक में एक भी समाचार

पाये । ग्राहक संख्या की ओर हमने कभी विशेष ध्यान नहीं दिया ।

बातचीत में वह यहाँ तक कह गये कि "यदि 'टाइम्स' के साहित्यिक परिशिष्ट में किसी व्यक्ति का सम्पादक के नाम पत्र भी छप जाय तो उसी आधार पर उसे कतिपय अमरीकी विश्वविद्यालय आचार्य की उपाधि दे देते हैं । संसार के अपनी कला के विशेषज्ञ 'टाइम्स' के लेखक हैं और पुस्तक समालोचना का हिसाब यह है कि सप्ताह में ४०० ६०० पुस्तकें प्राप्त होती हैं और समालोचना केवल एक दर्जन की ही प्रकाशित की जाती है । समालोचना का सिद्धान्त है — सब से अच्छी पुस्तक की सबसे अच्छी समालोचना' ।

कुल मिलाकर 'टाइम्स' के आठ साप्ताहिक और मासिक परिशिष्टांक निकलते हैं जो अपने विषयों के प्रामाणिक और सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं ।

'टेलीग्राफ' के सम्पादक महोदय से बातचीत होने पर ज्ञात हुआ कि ब्रिटेन में तथाकथित लोकप्रिय समाचार–बलात्कार, हत्या राहजनी लूटमार के सनसनीपूर्ण समाचार—पढ़ने की प्रवृत्ति एक साथ बढ़ गयी है । उन्होंने प्रश्न किया आपके देश में साक्षरता शिक्षा तथा रहन-सहन का स्तर बढ़ने पर और औद्योगीकरण के कारण भी अखबारों की ग्राहक संख्या अवश्य बढ़ी होगी । तो क्या मानव स्वभाव की कमजोरी का लाभ उठाने के लिये आपके यहाँ भी सनसनीपूर्ण समाचारों का आगमन नहीं हो गया है ? अथवा क्या आप इस लहर को अपने यहाँ रोक सकेंगे ।

अथवा फीचर ऐसा नहीं होता जो स्थानीय न हो। मानो बड़ी-बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय घटनाएं उसके लिये हैं ही नहीं। इसीलिए विभिन्न विज्ञापनदाताओं को जब कोई चीज रेडिंग कस्बे में पहुँचानी होती है तो वे 'इण्डीकेटर' के ही द्वारा पहुँचाने को बाध्य होते है। इस प्रकार पत्र की आर्थिक दशा भी अच्छी है। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि यदि स्थानीय दिलचस्पी के ही पत्र निकाले जाय तो निश्चय ही वे घर-घर पहुँचाये जा सकते हैं।

हमारे देश में इस प्रकार के पत्रों के परीक्षण नहीं के बराबर हुए हैं। प्राय देखने में आता है कि प्रादेशिक पत्रों में भी अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय समाचार भरे रहते है जिन्हें राष्ट्रीय पत्रों से पहले तो वे पहुँचा नही सकते इसलिए प्रतिद्वन्द्विता में वे पिछड़ जाते हैं और उनकी ग्राहक संख्या अधिक नहीं हो पाती।

ब्रिटेन का पत्रकार आर्थिक दृष्टि से भारतीय पत्रकारों की अपेक्षा अधिक सम्पन्न है किंतु काम भी वह पूरा-पूरा करता है और अपने पेशे का उसे सदा ध्यान भी बना रहता है कि कोई ऐसी बात न हो जाय कि व्यवसाय का नाम बद-नाम हो जाय।

मैं कल्पना करता हूं कि हमारे जैसे विशाल देश में पत्रों की ग्राहक संख्या जो दिन-दिन बढ़ रही है अवश्य ही उस सीमा तक पहुँच जायगी जहाँ पर आज ब्रिटेन के पत्र पहुँच चुके हैं।

●

यात्रा की समाप्ति

चार सप्ताह में जल्दी-जल्दी जो कुछ देख सका उसमें से अधिकांश का परिचय इस पुस्तक द्वारा कराने का यत्न किया गया है। जिस दिन लंदन हवाई अड्डे से मैं भारत के लिए रवाना हुआ कई बातें मेरे मन में आ-जा रही थीं। एक ओर जहाँ ब्रिटेन और अपने देश का बहुत सी बातों में मैं मुकाबला कर रहा था वहाँ दूसरी ओर यह भी सोच रहा था कि मुकाबला करना ठीक नहीं क्योंकि भारत एक प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति वाला देश अवश्य है परन्तु आधुनिक सभ्यता में उसका प्रवेश नया ही है।

यह बात विवादास्पद है कि भारत किस मार्ग पर चल कर कितनी जल्दी सम्पन्नता प्राप्त कर सकता है—अपने पुराने अथवा नये। परन्तु इस मसले के हल हुए बिना ही आधुनिक सभ्यता की ओर हम गतिमान होकर आगे बढ़ रहे हैं।

अपनी यात्रा के बीच हमें ब्रिटिश कृषि-अनुसंधान-केन्द्र रोथमस्टड देखने का अवसर मिला। लगता यह है कि ब्रिटेन एक उद्योग प्रधान देश है कृषि प्रधान नहीं इसलिए वहाँ कृषि अनुसंधान पर किसी ऐसे विशेष कार्य के होने की आशा नहीं

जिसका लाभ कृषि प्रधान भारत उठा सके किन्तु रोथमस्टे जाकर हमें यह लगा कि ऐसी बात बिल्कुल नहीं है। यह ठीक है कि कृषि-अनुसन्धान का कार्य ब्रिटेन में प्रथम महायुद्ध के बाद ही बढ़ा किन्तु इसकी बुनियाद प्रथम महायुद्ध से एक स वर्ष पहले जान बेनेट लाएस ने ही डाल दी थी। उन्होंने अनेक प्रकार के परीक्षण रोथमस्टेड के अपने निजी फार्म पर किये थे।

ब्रिटेन में गेहूँ नहीं होता था। अब भी अधिकतर जौ, जई तथा चावल होता है किन्तु हमने देखा कि रोथमस्टेड में गेहूँ उगाया जा रहा है और कोशिश यह की जा रही है कि ऐसी अच्छी किस्म का गेहूँ तैयार किया जाय जिसे लाभ क काम में लाया जा सके और जहाँ तक सम्भव हो बाहर से आयात कम किया जाय। पता नहीं यह स्थिति कब आ पायेगी किन्तु हमने वहाँ एक अभिनव परीक्षण यह देखा कि गेहूँ के हरे पौधों से एक साधारण मशीन द्वारा प्रोटीन निकाला जा रहा है। उस काई रंग के प्रोटीन के बने दो छोटे समोसे भी हमने खाये और विश्वास कीजिए कि फिर शाम तक हमें और कुछ खाने की जरूरत न हुई।

उड़ते विमान में मैं सोच रहा था कि वह समय दूर नहीं जब आदमी को भोजन करने पर अधिक समय खर्च करने की फुरसत न रहेगी। तब शायद नाश्ता और भोजन के पौष्टिक तत्वों से पूर्ण गोलियाँ ऐसे अनुसंधान-केन्द्र बनाने में अवश्य सफल हो जायेंगे। क्या जरूरत रह जायगी चार रोटियाँ खाने

छोटी
ुनिक

त्येस
छ ये
बहुत
निकट
कर
ार
इस
ाँ ही
कि
मक
पर
कुछ
ा है
धक
कि